JAL PRAHARI

सुजलाम भारत

MISSION FOR WATER & CLIMATE

7वां संस्करण

जल प्रहरी 2026



SINGHANIA UNIVERSITY

IndianOil

Bharat Petroleum

NAMAMI GANGE

अमर उजाला

DocMaster

HURL

BIG FM

Bharat Petroleum

Years of Shaping The Future



shaping the energy of tomorrow

Bharat Petroleum, a Fortune Global 500 Company and India's second-largest Oil Marketing Company, is a leader in the integrated energy sector.

As a Maharatna enterprise, our refineries boast a combined capacity of 35.3 MMTPA, with a vast network comprising over 25,300 Energy Stations, 6,200 LPG distributorships, and more. Embracing sustainability, we are on a mission to offer electric vehicle charging at 7000 stations.

Committed to a Net Zero Energy future by 2040 in scope 1 & scope 2 emissions, we're not just an energy company; we're shaping a sustainable tomorrow.

Join us in Energising Lives and Building a Greener Planet!

Scan QR to know more

Table of Contents

Bhumi singh	01	Ram bharosa meena	55
Photo gallery	03	Sandeep chaudhary	57
Anil sagar	21	Sanjay kumar	59
Aditnath gorakhnath	23	Savitri shrivastava	61
Ajay krantikari	25	Sureshpal jadon	63
Akshay nayak	27	Vinay dass	65
Anandabhai n. Jat	29	Arvind aggarwal	68
Anita paliwal	31		
Ankit kumar	33		
Bhupendra paliwal	35		
Dashrath sharma	37		
Rameshwar lal	39		
Dilipbhai sakhiya	41		
Dr. Meenu khare	43		
Dr. Pawan kumar	45		
Gamer singh & Tanerao singh	47		
Mct pareva	49		
Milind pandit & swati samvatsar	51		
Rajiv sharma	53		



जल प्रहरी परिवार के सदस्य नाम
फाउंडेशन के संस्थापक
श्री नाना पाटेकर जी को
नम आँखों से श्रद्धांजलि

JAL PRAHARI 2026

બનાસકાંઠાના શિક્ષક અણદાભાઈ જાટને રાષ્ટ્રીય સ્તરે 'જલ પ્રહરી એવોર્ડ'થી સન્માનિત કરાયા



(બનાસ ગૌરવ) તા. ૨૫

■ જળ સંચય અને જળ સંરક્ષણ ક્ષેત્રે અનુકરણીય અને ઉત્કૃષ્ટ કામગીરી બદલ દેશભરના ૩૧ 'જળ યોદ્ધાઓ'ને રાષ્ટ્રીય સ્તરના પ્રતિષ્ઠિત 'જલ પ્રહરી એવોર્ડ'થી સન્માનિત કરવામાં આવ્યા છે. ગત ૨૩ ઓક્ટોબર ૨૦૨૬ના રોજ નવી દિલ્હી સ્થિત વિશ્વ યુવા કેન્દ્ર ખાતે આ ભવ્ય રાષ્ટ્રીય સમારોહ યોજાયો હતો.

આ કાર્યક્રમમાં ભારત સરકારના જળ શક્તિ મંત્રાલયના રાજ્ય મંત્રી ડૉ. રાજ ભૂષણ ચૌધરી, વિવિધ પદ્મશ્રી એવોર્ડ વિજેતા મહાનુભાવો તેમજ અગ્રણીઓની વિશેષ ઉપસ્થિતિ રહી હતી.

આ રાષ્ટ્રીય સન્માન સમારોહમાં ગુજરાતના બનાસકાંઠા જિલ્લાના પ્રેરણાદાયી શિક્ષક અણદાભાઈ જાટનું નામ પણ ગર્વભેર સામેલ થયું છે. તેમણે બનાસકાંઠા પંથકને હરિયાળો બનાવવાના હેતુથી ખેત તલાવડીઓનું નિર્માણ, બોર અને કૂવા રિચાર્જ જેવા જળ સંચયના ઉત્તમ કાર્યો કર્યા છે.

શિક્ષક તરીકેની ફરજ બજાવવાની સાથે-સાથે વરસાદી પાણીના સંગ્રહ અને ભૂગર્ભ જળસ્તર ઊંચા લાવવા માટે તેમણે કરેલા ભગીરથ પ્રયાસોની રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ નોંધ લેવાઈ છે.

દિલ્હી ખાતે તેમને એનાયત થયેલા આ 'જલ પ્રહરી એવોર્ડ'થી સમગ્ર બનાસકાંઠા જિલ્લા તેમજ ગુજરાતનું ગૌરવ રાષ્ટ્રીય ફલક પર વધ્યું છે.

दैनिक नवज्योति

nekhawati - 25 Oct 2026 - Page 7

भूपेन्द्र पालीवाल को मिला जल प्रहरी सम्मान 2026

न्यूज सर्विस/ नवज्योति, चिड़ावा। नई दिल्ली स्थित विश्व युवक केंद्र में आयोजित सातवें 'जल प्रहरी सम्मान 2026' समारोह में रामकृष्ण जयदयाल डालमिया सेवा संस्थान, चिड़ावा के परियोजना प्रबंधक भूपेन्द्र पालीवाल को जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। पालीवाल को यह सम्मान जलपुरुष एवं रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित डॉ. राजेन्द्र सिंह, जल शक्ति मंत्रालय के राज्य मंत्री राजभूषण, जैन मुनि लोकेश, आरएसएस के पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के अखिल भारतीय प्रमुख गोपाल आर्या तथा जल प्रहरी संयोजक अनिल सिंह सागर की उपस्थिति में प्रदान किया गया।



उन्हें विशेष रूप से झुंझुनूं जिले में जल संरक्षण के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए चुना गया। पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं राज्यसभा सांसद न्यायमूर्ति रंजन गोगोई जूरी अध्यक्ष रहे। समारोह में देशभर के अन्य चयनित जल प्रहरियों को भी सम्मानित किया गया।

11:02 96

लोकमत



आदिनाथ ढाकणे यांना 'राष्ट्रीय जलप्रहरी' पुरस्कार प्रदान करताना केंद्रीय जलसंसाधन राज्यमंत्री राजभूषण चौधरी, डॉ. राजेंद्र सिंह, डॉ. अनिल सिंह.

नदी स्वच्छतेसाठी कार्यरत आदिनाथ ढाकणे सन्मानित

लोकमत न्यूज नेटवर्क

कोपरगाव : कोपरगाव शहरातून वाहणाऱ्या गोदावरी नदीच्या स्वच्छतेसाठी गेल्या ३१९ आठवड्यांपासून अव्याहत कार्य करणारे पर्यावरणप्रेमी आदिनाथ गोरखनाथ ढाकणे यांना त्यांच्या उल्लेखनीय जलसंवर्धन व नदी स्वच्छता कार्याची दखल घेत 'जल प्रहरी २०२६' या राष्ट्रीय पुरस्काराने नवी दिल्ली येथे सन्मानित करण्यात आले.

देशभरातील विविध राज्यांमध्ये नदी पुनर्वसन, जलसंवर्धन व पर्या रक्षणासाठी कार्य करणाऱ्या जलदू यावेळी राष्ट्रीय स्तरावर गौरव कर आला. केंद्रीय जलसंसाधन राज राजभूषण चौधरी तसेच जलपुरु मॅगसेसे पुरस्कार प्राप्त डॉ. राजेंद्र आयोजक डॉ. अनिल सिंह यांच्या आदिनाथ ढाकणे यांना 'जल २०२६' पुरस्कार प्रदान करण्यात ३ या कार्यक्रमास दिल्लीचे खासदार ३ सिंह, भाजपा प्रदेश महामंत्री यो सिंह, प्रो. गोपाल आर्य, लोकेश यांच्यासह विविध मान्यवर उपस्थित

બનાસકાંઠાના શિક્ષક અણદાભાઈ જાટને નવી દિલ્હી ખાતે રાષ્ટ્રીય સ્તરના 'જલ પ્રહરી એવોર્ડ'થી સન્માનિત કરાયા



તસ્વીર-અહેવાલ :- ગૌતમ વારેચા

★ભારતની અસ્મિતા, ૨૬

જળ સંચય અને જળ સંરક્ષણ ક્ષેત્રે ઉત્કૃષ્ટ અને અનુકરણીય કામગીરી કરવા બદલ ગુજરાતના બનાસકાંઠા જિલ્લાના પ્રેરણાદાયી શિક્ષક અણદાભાઈ જાટને રાષ્ટ્રીય સ્તરના પ્રતિષ્ઠિત 'જલ પ્રહરી એવોર્ડ'થી સન્માનિત કરવામાં આવ્યા છે.૨૩ ઓક્ટોબર ૨૦૨૬ના રોજ નવી દિલ્હી સ્થિત વિશ્વ યુવા કેન્દ્ર ખાતે એક ભવ્ય રાષ્ટ્રીય સમારોહ યોજાયો હતો. આ કાર્યક્રમમાં ભારત સરકારના જળ શક્તિ મંત્રાલયના રાજ્ય મંત્રી ડૉ. રાજ ભૂષણ ચૌધરી તેમજ વિવિધ પદ્મશ્રી એવોર્ડ વિજેતા મહાનુભાવોની વિશેષ ઉપસ્થિતિ રહી હતી, જેમણે દેશભરમાંથી પસંદ કરાયેલા ૩૧ 'જળ યોદ્ધાઓ'નું ગૌરવ વંતુ સન્માન કર્યું હતું. બનાસકાંઠા પંથકને હરિયાળો બનાવવાના ભગીરથ હેતુથી અણદા ભાઈ જાટ દ્વારા ખેત તલાવડીઓનું નિર્માણ, બોર અને કૂવા રિચાર્જ જેવા જળ સંચયના ઉત્તમ કાર્યો કરવામાં આવ્યા છે. સ્થાનિક સ્તરે વરસાદી પાણીના ટીપેટીપાનો સંગ્રહ કરી ભૂગર્ભ જળસ્તર ઊંચા લાવવાના તેમના આ સક્રિય પ્રયાસોની રાષ્ટ્રીય કક્ષાએ ગંભીરતાથી નોંધ લેવાઈ છે. શિક્ષક તરીકેની ફરજ બજાવવાની સાથે-સાથે પર્યાવરણ અને જળ જતન માટે તેમણે દાખવેલી આ નિષ્ઠાએ સમગ્ર બનાસકાંઠા જિલ્લા સહિત સમગ્ર ગુજરાતનું નામ રાષ્ટ્રીય ફલક પર રોશન કર્યું છે.

JAL PRAHARI 2026

आजमगढ़ के पवन कुमार को मिला जल प्रहरी सम्मान

सातवें राष्ट्रीय जल प्रहरी सम्मान समारोह में हुए सम्मानित, उपलब्धि आजमगढ़ की जनता और समर्पित कार्यकर्ताओं को की समर्पित।



आजमगढ़। जल एवं नदी संरक्षण के क्षेत्र में किए गए प्रयासों को राष्ट्रीय पहचान मिली है। नई दिल्ली स्थित विश्व युवक केंद्र में 23 अक्टूबर को आयोजित सातवें जल प्रहरी सम्मान समारोह-2026 में आजमगढ़ के डॉ. पवन कुमार को सम्मानित किया गया। आजमगढ़ के लिए यह पहला जल प्रहरी सम्मान है। यह सम्मान जलवायु अनुकूलन न्यास द्वारा दिया गया है। जो कि नीति आयोग भारत सरकार द्वारा समर्थित है। इसके संयोजक अनिल सिंह सागर हैं। इस बार जल प्रहरी निर्णायक मंडल के अध्यक्ष भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंजन गोगोई रहे हैं।समारोह में देशभर के लगभग 31 जल संरक्षकों को सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश से छह लोगों का चयन हुआ, जिनमें अजय क्रांतिकारी, अक्षय नायक, आरजे डॉ. मीनू खरे (लखनऊ), डॉ. पवन कुमार, संदीप चौधरी और संजय कुमार शामिल हैं। इन सभी को जल संरक्षण, नदियों एवं तालाबों की रक्षा और जनभागीदारी के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।सम्मान प्राप्त करने के बाद डॉ. पवन कुमार ने इस उपलब्धि को आजमगढ़ की जनता, लोक दायित्व और जल संरक्षण के लिए कार्य करने वाले समर्पित कार्यकर्ताओं को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान केवल किसी एक व्यक्ति की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन सभी लोगों के सामूहिक प्रयासों की पहचान है, जिन्होंने नदियों के संरक्षण के लिए श्रम किया और समाज में जल के प्रति जागरूकता बढ़ाई।उन्होंने कहा कि नदी संरक्षण किसी एक व्यक्ति या संस्था की जिम्मेदारी नहीं है। नदियों को बचाने के लिए गांवों, युवाओं, विद्यालयों और आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाकर ही प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखा जा सकता है।डॉ. पवन कुमार और लोक दायित्व की गतिविधियां मूल सरयू बचाओ अभियान सहित नदी संरक्षण, जल जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी पर केंद्रित रही हैं। इन अभियानों के माध्यम से लोगों को नदियों और जलस्रोतों की सुरक्षा के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। डॉ. पवन कुमार ने कहा कि जलस्रोतों की नियमित देखभाल, प्रदूषण पर रोक और स्थानीय समुदायों की भागीदारी जल संरक्षण की स्थायी सफलता के लिए जरूरी है।समारोह में केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राजभूषण चौधरी, भाजपा सांसद अरुण सिंह, पर्यावरण गतिविधि प्रमुख गोपाल आर्य तथा जल संरक्षण कार्यकर्ता राजेंद्र सिंह और उमाशंकर पांडेय सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।जल प्रहरी सम्मान का उद्देश्य जल संरक्षण, पारंपरिक जलस्रोतों के पुनर्जीवन और जनभागीदारी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को राष्ट्रीय पहचान देना है। डॉ. पवन कुमार को मिला यह सम्मान आजमगढ़ में चल रहे जल संरक्षण प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

दैनिक भास्कर ग्वालियर 25-10-2026

सावित्री को मिला जलप्रहरी सम्मान



ग्वालियर। जल संरक्षण और जलसंसाधनों के प्रबंधन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए ग्वालियर की सावित्री श्रीवास्तव (वाटर वूमन) को सातवां जलप्रहरी सम्मान प्रदान किया गया है। नई दिल्ली के विश्व युवक केंद्र में गत दिवस आयोजित समारोह में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान पाने वालों में देशभर के 31 लोग शामिल हैं। कार्यक्रम में डा. राजभूषण चौधरी, सांसद अरुण सिंह, पर्यावरण गतिविधि प्रमुख गोपाल आर्य, जल संरक्षण कार्यकर्ता राजेंद्र सिंह सहित कई प्रमुख लोग शामिल थे।

आज देशभर के 31 जल संरक्षकों को दिया जाएगा जल प्रहरी सम्मान-2026

अमर उजाला
मीडिया सहयोगी

नई दिल्ली। जल संरक्षण और जल स्रोतों को फिर से जीवंत करने के लिए देशभर के 31 जल संरक्षकों को जल प्रहरी सम्मान-2026 से सम्मानित किया जाएगा। इनका चयन नामांकन के आधार पर हुआ है। सम्मान समारोह 23 अक्तूबर को तीनमूर्ति स्थित विश्व युवक केंद्र और प्रधानमंत्री संग्रहालय में आयोजित होगा।

जल प्रहरी के संयोजक अनिल सिंह के अनुसार, इस साल उत्तर प्रदेश से छह लोगों का चयन किया गया है। इनमें अजय क्रांतिकारी, अक्षय नायक, आरजे डॉ. मीनू खरे (लखनऊ), डॉ. पवन कुमार, संदीप चौधरी और संजय कुमार शामिल हैं। इन सभी को जल संरक्षण और जल स्रोतों के पुनर्जीवन के क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए सम्मानित किया जाएगा। इसके अलावा दिल्ली व गुजरात से दो-दो, राजस्थान से पांच, मध्य प्रदेश से तीन, महाराष्ट्र और झारखंड से एक-एक सम्मान के लिए शामिल है। इसमें अमर उजाला मीडिया पार्टनर की भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम आयोजन समिति के सदस्य अमन डी. वशिष्ठ ने बताया कि अब तक कई आईएएस, आईपीएस, आरएएस अधिकारियों, किसानों और गैर सरकारी संगठनों से जुड़े लोगों को यह सम्मान दिया जा चुका है।

इस वर्ष के समारोह में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पर्यावरण गतिविधि प्रकल्प प्रमुख गोपाल आर्य सहित कई पद्मश्री सम्मानित हस्तियों और विदेशी राजदूतों को आमंत्रित किया गया है। जल प्रहरी निर्णायक मंडल के अध्यक्ष भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस रंजन गोगोई हैं। इस सम्मान का उद्देश्य जल संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को प्रोत्साहित करना और समाज में पानी बचाने के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। ब्यूरो

THANKS FOR GOOD COVRAGE

BIG FM
dhun badal ke toh dekho

न्यूज़

पर्यावरणविद् रामभरोस मीणा को जल प्रहरी सम्मान मिला



थानागाजी| एलपीएस विकास संस्थान अलवर के प्रमुख एवं पर्यावरणविद् रामभरोस मीणा उर्फ हरियाली बाबा को जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए जल प्रहरी सम्मान से सम्मानित किया गया। शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित विश्व युवक केंद्र में आयोजित समारोह में केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राज भूषण चौधरी ने उन्हें सम्मान प्रदान किया।

Meenu Khare gets Jal Prahari honour

Former deputy director and programme head of All India Radio, Meenu Khare, received the Jal Prahari Samman 2026 for her contributions to water



conservation, river rejuvenation and environmental awareness. Khare founded the Blue Drop Foundation and Radio Blue Drop, which work to protect rivers and ponds.

"You will always find an answer in the sound of water."

-Zhuangzi



For most of my childhood, water was simply H O a chemical formula taught in classrooms, two atoms of hydrogen and one of oxygen. It was something I studied, something I consumed, but rarely something I contemplated. I knew its composition, yet I knew very little of its character. I understood its necessity, but not its significance.

As the years passed, a few experiences quietly began to change my understanding. I realised that water is far more than a chemical compound. It is a silent witness to civilisation, a keeper of memories, a source of dignity, and perhaps the purest expression of life's interconnectedness.

Water has a philosophy of its own. It teaches us humility by always finding its way to the lowest ground, perseverance by carving paths through the hardest rocks, and generosity by sustaining life without ever asking for recognition. It reminds us that true strength does not always lie in resistance; sometimes, it lies in the ability to flow. Years later, life brought me to Jal Prahari, an initiative that transformed my understanding of water into a sense of purpose. What was once merely a formula in my science textbook has now become a responsibility I wish to carry throughout my life.

But for me, Jal Prahari is more than an initiative. It is my father's vision, his years of dedication, and a legacy built upon the belief that protecting water is ultimately about protecting humanity.

Growing up, I may not have fully understood the depth of his commitment. Today, I recognise that his work was never simply about conserving rivers, reviving water bodies, or honouring those who protect them. It was about awakening a collective conscience. It was about reminding society that water is not an inheritance we own, but a responsibility we hold in trust for generations yet to come.

As I find myself becoming part of this journey, I realise that a legacy is not something we merely inherit; it is something we must continuously earn.

My aspiration is not simply to preserve what my father has built, but to carry its spirit forward to bring Jal Prahari closer to young minds, to transform awareness into action, and to make water conservation not merely a campaign, but a culture. I dream of a generation that sees every river as a living heritage, every pond as a shared responsibility, and every drop as a promise to the future.

Perhaps the most beautiful thing about water is that it never truly belongs to one place or one generation. It flows from the past into the present and continues towards a future we may never see.

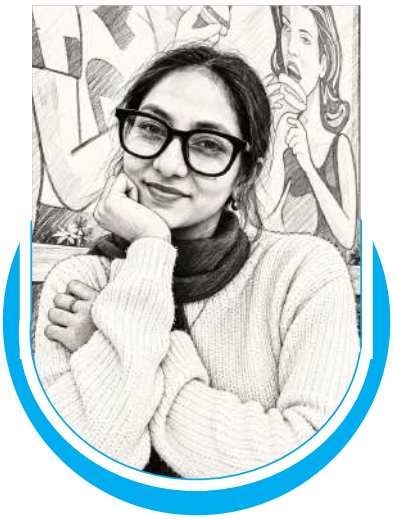
My father began a journey. I feel grateful to have the privilege and responsibility of contributing my efforts in it. Not merely to follow his footsteps, but to ensure that the path he created continues to lead others towards a more water-conscious world.

Today, it is a philosophy, a purpose, a responsibility, and a legacy.

And somewhere between the child who memorised its formula and the person who now wishes to protect it, I have begun to understand what Zhuangzi meant.

The answer was always in the sound of water. I simply had to learn how to listen.

-Bhumi Singh



अनिल सिंह सागर
जल प्रहरी न्यास संयोजक



जल, जमीन और जमीर के प्रदूषण को नष्ट कर करें प्रभु श्रीराम का स्वागत

जल प्रहरी समारोह दिपावली से पहले आयोजित किया जा रहा है और यहीं से मन में सवाल उठ रहे हैं कि आखिर प्रभु राम जैसे हम नहीं बन सकते क्या! आज्ञाकारी पुत्र श्री राम ने प्रकृति की रक्षा, संरक्षण का भी संदे ा दिया। रावण आज के लालची और शैतानी इंसान का प्रतिनिधित्व करता है। बड़ा वैज्ञानिक, इंजीनियर तकनीक का विशेषज्ञ होने के बावजूद वह मानवीयता में पीछे क्यों रह गया।

यहां उसकी तकनीकी कौ ाल का ही चित्रण है कि खनन कर के जो सोना निकाला गया उससे लंका की श्रृंगार हुआ। वह इस सुंदरता, अपनी कौ ाल कला के चलते ही अहंकारी होता गया। फिर वह अहंकार, अतिक्रमणकारी आक्रांता के रूप में बदला, फिर वह प्रकृति की मूर्ति सीता माता का भी अपहरण करके ले गया। उसके जीवन में केवल अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण ही दृष्टिगत होते हैं। उसने अपने आपको बचाने के लिए दस सिर और बीस हाथ बना लिए थे। वह तो आसमान तक सीढ़ी लगाकर उस पर कब्जा कर चुका था। बादल और हवा भी उसने अपने नियंत्रण में कर लिए थे।

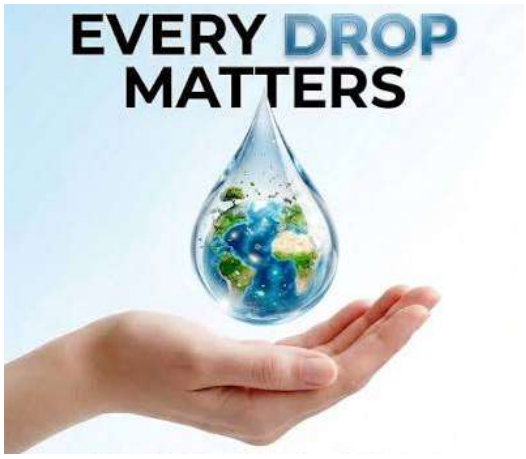
आज समाज में बहुत बडे स्तर पर रावण हैं जो अपने अहंकार, तकनीकी कौ ाल के आगे मानवीयता भूल रहे हैं, अहंकार सडकों से लेकर जन जीवन में दिखता है। इस पर एआई ने बताया है कि मानवीयता के साथ ही जीवन संभव है वर्ना तकनीकी के आधार पर अहंकार को पालना कदाचित उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

मोह, क्रोध और लालच से मुक्त, सभी का सुख चाहने वाले श्रीराम को रावण से लड़ते हुए भी क्रोध नहीं आया। धोखा, झूठ और फरेब तो उनके आसपास भी नहीं आते थे। सभी के कल्याण की मूर्ति श्रीराम ने शोषण, प्रदूषण और अतिक्रमणकारी रावण की नाभि में ही स्थित राक्षसी शक्ति को अपने तीर से नष्ट किया।

राक्षसी संस्कृति का विनाश करना ही क्रांतिकारी संस्कृति का पुनर्जागरण या पुनर्जन्म है। अब तो रावण जैसी शिक्षा ने डेटा सेंटर जैसे खतरनाक रावणों को जन्म देना भारत में भी शुरू कर दिया है। रावणी शक्तियों का पुनर्जन्म हो रहा है। श्रीराम प्रकृति के नायक थे, जबकि रावण प्रकृति–विनाशक नायक था। आज श्रीराम जैसे नायक ही चाहिए, जो आर्थिक ढाँचे का संतुलन स्थापित करके प्राकृतिक ढाँचा खड़ा करें।

जल प्रहरी ने पूरी ईमानदारी से यह प्रयास किया है कि उन हाथों को पकडा जाए जो जमीन पर प्रकृति की रक्षा में जुटे हैं। उन चेहरों को सामने लाया जाए जो अहंकारी रावण का ना ा करने में सक्षम हैं। दिपावली पर ऐसे ही संकल्प हम करें कि प्रदूशण न करें न जो कर रहा है उसके चेहरे को भी बेनकाब करें। इसमें सरकारी सिस्टम हो या निजी हम पीछे नहीं रह सकते। आओ, अभी से पूरी ईमानदारी से अगली दिपावली तक प्रभु श्री राम के आगमन से पहले जल, जंगल, जमीन और जमीर के प्रदूशण को नश्ट करें।





JAL PRAHARI 2026









JAL PRAHARI 2026

















JAL PRAHARI 2026







JAL PRAHARI 2026







GLIMPSES 2025 FROM JAL PRAHARI








सुजलम भारत की दिशा में एक पहल...
छठा संस्करण
जल प्रहरी
2025
Supported by
नमामि गंगे
Jal Parhari


IndianOil
सुजलम भारत की दिशा में एक पहल...
जल प्रहरी
2025
Jal Parhari
Samman Samaroh


जल प्रहरी
2025
Jal Parhari
Samman Samaroh
नमामि गंगे




2025




Date : 11 December 2025
Venue : New Masharashtra Sadan, KG Marg, New

GLIMPSES 2024 FROM JAL PRAHARI














जल प्रहरी सम्मान समारोह

GLIMPSES 2023 FROM JAL PRAHARI







GLIMPSES 2022 FROM JAL PRAHARI






जल प्रहरी









GLIMPSES 2021





GLIMPSES 2021





GLIMPSES 2021





GLIMPSES 2019







GLIMPSES 2019







MANAGEMENT TEAM



Principal Prof. Haritma Chopra Ji



Prof. Ramesh Kumari



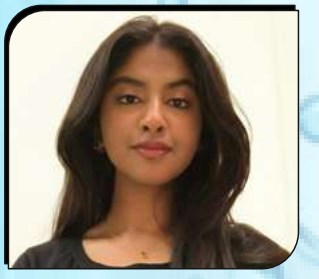
Arpita Yadav



Sharvani Sancheti



Tara Janu



Ananya Kumari



Ananya Chawla



Supriya Tewari



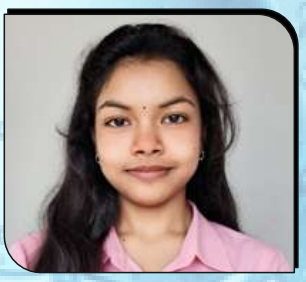
Pranjal Tewari



Yashika Mittal



Pragya



Sweety Himle



Devyani Shukla



Suman



Raj Lakshmi



Kajal Kumari

JURY



Justice Sh. Ranjan Gogoi Ji
(Jury Chairman)



Sh. Yugul Joshi Ji
(Niti Aayog)



Sh. Dv Singh Ji
(Former THDC Chairman)



Sh. Manoj Kumar IAS
(VC Singhania University)



Sh. Mohan Nagar Ji
(Padamshree)



Sh. Devendra Gupta Ji
(Laadli Foundation)



Sh. Ramveer Tanvar Ji
(Pondman of India)



Sh. Col Prakash Tiwari Ji
(Environment Expert)



Sh. PL Gautam Ji
(Padamshree)



Sh. Nabin Roy Ji
(Nabard)



Sh. Nitin Waghmore Ji
(Income Tax Commissioner Pune)



Smt. Anita Karn Ji
(IFS)



Sh. Krishanpal Singh Ji

ORGANIZING COMMITTEE



Shri Manoj Pandey Ji



Shri Rajesh Goyal Ji



Shri Rajkumar Ji



Shri Sanket Chaturvedi Ji



Shri Yp Singh



Shri Aman D Vashishtha



Shri NK Sethi Ji



Shri Rajiv Lal Ji



Shri Ajay Kaushik Ji



Lt. Shri Col Ashwin Pogula Ji



Shri Lalit Mittal Ji



Shri Abhishek Kativar



Shri Ajay Aggarwal Ji

नमामि गंगे

सुझलाम भारत की दिशा में एक पहल...

भारत पेट्रोलियम

50 स्वर्णिम वर्ष

सातवां संस्करण

JAL PRAHARI 2026

Date: 23 October 2026

Venue: Vishwa Yuvak Kendra, near Prime Minister's Museum (Teen Murti), New Delhi

Every drop saved today secures a better tomorrow.

DISTINGUISHED GUESTS
विशिष्ट अतिथि

Hon'ble Sh. C. R. Patil Ji
Minister of Jal Shakti, Government of India

Sh. Gopal Arya Ji
Paryavaran Gatividhi Pramukh, RSS

Sh. Rajendra Singh Ji
Water Conservationist

Smt. Rekha Gupta Ji
CM, Delhi

Sh. Parvesh Verma Ji
Water Minister, Govt. Of Delhi

Sh. Ashish Sood Ji
(Environment & Forests), Govt. of Delhi

Sh. Swami Avdheshanand Giri Ji
Spiritual Leader

Sh. Acharya Lokesh muni ji
Spiritual Leader

Sh. Raj Bhushan Choudhary Ji
Former Water Minister, Govt. of Delhi

SUPPORTED BY

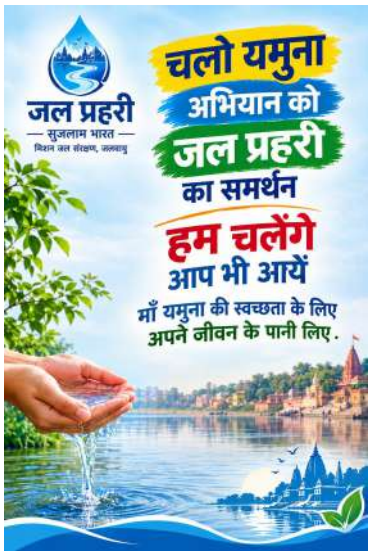
IndianOil · SINGHANIA UNIVERSITY · HURL · DELHI METRO · LIC भारतीय जीवन बीमा निगम LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

DocMaster · Bharatiya Aim NEET Dialogue Centre · JAL PRAHARI सुजलाम भारत · brands 2life · अमर उजाला

भारत पेट्रोलियम 50 स्वर्णिम वर्ष · भारतीय प्रौद्योनिकी संस्थान कानपुर INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY KANPUR · brands 2life

जल है तो कल है

ACTIVITIES


जल प्रहरी
— सुजलाम भारत —
चलो यमुना
अभियान को
जल प्रहरी
का समर्थन
हम चलेंगे
आप भी आयें
माँ यमुना की स्वच्छता के लिए
अपने जीवन के पानी लिए.




Shri Anil Sagar


यमुना
सफाई में जुड़ें
14 जून,
सुबह 6 बजे से
स्वच्छ यमुना
स्वस्थ दिल्ली
सशक्त भारत
नरेन्द्र मोदी
तनजीत सिंह संधू
रेखा गुप्ता
JAL
PRAHARI
निवेदक : जल प्रहरी
आइए, मिलकर यमुना को स्वच्छ बनाएं
आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे बचाएं




INDIA INTERNATIONAL
WATER WEEK-2026


जन अभियान
पूजन एवं जल संवाद



आदिनाथ गोरखनाथ ढाकणे

गोदामाई ट्रस्ट, कोपरगांव, महाराष्ट्र



गोदावरी नदी स्वच्छता, जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण अभियान

स्थानः कोपरगांव तहसील, महाराष्ट्र | सक्रियतारू वर्ष 2018 से निरंतर

वर्ष 2018 से हम महाराष्ट्र के कोपरगाव तहसील क्षेत्र में गोदावरी नदी की स्वच्छता, जलसंरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर जनभागीदारी के साथ कार्य कर रहे हैं। हमारा यह अभियान केवल नदी से कचरा हटाने तक सीमित नहीं है, बल्कि नदी के प्राकृतिक स्वरूप को संरक्षित करने, जलस्रोतों के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करने तथा भावी पीढ़ियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत करने का एक सतत प्रयास है।

अभियान के अंतर्गत प्रत्येक रविवार को नदी में उतरकर स्वच्छता अभियान चलाया जाता है। इस दौरान नदी से कपड़े, प्लास्टिक की बोतलें, चप्पलें, तस्वीरें, मूर्तियाँ तथा अन्य प्रकार का अपशिष्ट बाहर निकाला जाता है। अभियान के आयोजकों के अनुसार, प्रत्येक रविवार को 2000 किलोग्राम से अधिक कचरा नदी से निकालने का प्रयास किया जाता है। वर्षों से जारी इस निरंतर पहल ने नदी के आसपास के क्षेत्रों की स्वच्छता में सुधार लाने और स्थानीय नागरिकों में जलसंरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके सकारात्मक परिणामस्वरूप लोग अब नदी में कचरा डालने से बचने के प्रति अधिक सजग हो रहे हैं।

नदी स्वच्छता के साथ–साथ हम गोदावरी नदी के तट पर वृक्षारोपण भी कर रहे हैं। लगाए गए पौधों एवं पेड़ों की नियमित देखभाल के माध्यम से नदी के आसपास के प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने, हरित क्षेत्र बढ़ाने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है।

इस अभियान की एक महत्वपूर्ण विशेषता युवाओं एवं विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी है। हम स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों को अभियान से जोड़कर उनके साथ नदी में उतरकर स्वच्छता गतिविधियाँ तथा जनजागृति कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को गोदावरी नदी के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय महत्व, जलस्रोतों के संरक्षण, प्लास्टिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों तथा स्वच्छ पर्यावरण की आवश्यकता के बारे में जागरूक किया जाता है। हमारा विश्वास है कि विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी से जलसंरक्षण का संदेश परिवारों और व्यापक समाज तक पहुँचाया जा सकता है।

अभियान के प्रमुख उद्देश्य

– गोदावरी नदी को स्वच्छ, प्रदूषणमुक्त एवं पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास करना।

– नदी एवं अन्य प्राकृतिक जलस्रोतों का संरक्षण और संवर्धन करना।

– नदी में कचरा डालने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए जनजागृति एवं सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना।

– वृक्षारोपण और पौधों की नियमित देखभाल के माध्यम से नदी तट के प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करना।

– विद्यार्थियों, युवाओं और स्थानीय नागरिकों को जलसंरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के अभियान से जोड़ना।

– समाज में स्वच्छता, जलसंरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति दीर्घकालिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना।

गोदावरी नदी की स्वच्छता एवं जलसंरक्षण के माध्यम से प्रकृति के प्रति जनभागीदारी को मजबूत करना और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, सुरक्षित एवं सतत जलस्रोत सुनिश्चित करने की दिशा में निरंतर कार्य करना। हमारा मानना है कि 'नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और प्रकृति की अमूल्य धरोहर हैय इसका संरक्षण हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।'

अभियान की उपलब्धियाँ संख्यात्मक करेंअभियान में स्पष्ट आह्वान जोड़ें




एक तिर्थ
परम सद्गुरु श्री आचार्य महाराज मंदिर घाट











अजय कुमार तिवारी

जिन्हें लोग '''अजय क्रांतिकारी'''
वि वनाथगंज, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदे ।



पर्यावरण सेना बनाकर अजय क्रांतिकारी ने किया प्रदूषण के विरुद्ध जंग का ऐलान

जल पंचायतों और जल सभाओं के माध्यम से जल संरक्षण के लिए जनभागीदारी को बनाया जनआंदोलन, सकरनी

जल संकट, वायु प्रदूषण, बढ़ते वैश्विक तापमान और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले से शुरू हुआ पर्यावरण संरक्षण का एक जनअभियान आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है।

मान्धाता ब्लॉक के पूरेखरगराय गांव के अजय ने पर्यावरण संकट की गंभीरता को समय रहते समझते हुए 9 अगस्त 2002 को 'पर्यावरण सेना' का गठन किया। '''जय प्रकृति, जय जगत''' के प्रेरक नारे के साथ शुरू हुई इस पहल का उद्देश्य लोगों को प्रकृति की रक्षा, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण के लिए जागरूक करना था। उस समय जब लोग वृक्षारोपण को वन विभाग की जिम्मेदारी मानते थे, अजय क्रांतिकारी ने समाज को समझाया कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी विभागों का काम नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

आज पर्यावरण सेना के अनुसार, देशभर में लगभग 50 हजार लोग पर्यावरण सैनिक के रूप में इस अभियान से जुड़े हैं। प्रतापगढ़ से शुरू हुआ यह हरित मिशन उत्तर प्रदेश के साथ देश के अन्य राज्यों तथा नेपाल और सऊदी अरब जैसे देशों तक पहुंच चुका है। इस अभियान की विशेषता यह है कि इसमें बिना सरकारी वित्तीय सहायता पर निर्भर हुए, व्यक्तिगत प्रयासों और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के कार्य किए जा रहे हैं। जल संकट से निपटने के लिए जल पंचायतों और जल सभाओं का आयोजन कर लोगों को जल संरक्षण, वर्षाजल संचयन और जलस्रोतों के पुनर्जीवन के प्रति जागरूक किया है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीणों को जल की महत्ता समझाने के साथ जल संरक्षण को सामुदायिक जिम्मेदारी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यावरण सेना द्वारा संचालित जल रक्षक योजना तथा 'कैच द रेन' अभियान के अंतर्गत ग्रामीणों को वर्षाजल संचयन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके तहत घरों की छतों से वर्षाजल को पाइपों के माध्यम से कुओं तक पहुंचाने की पहल की जा रही है, ताकि भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा मिल सके। साथ ही, तालाबों की सफाई, जलस्रोतों के संरक्षण और पंचायतों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में जनभागीदारी से प्रयास जारी हैं।

नवाचारों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण पर्यावरण सेना ने वृक्षारोपण अभियान, हरित जन्मदिन उत्सव, वरिष्ठ नागरिकों के जन्मदिन पर पौधरोपण, हरित विवाह आंदोलन, स्मृति वन निर्माण, वृक्ष रक्षा अभियान और 'एक पेड़ मां के नाम' की भावना से पौधरोपण एवं उनकी देखभाल को प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त, 'साइकिल चलाओ, पर्यावरण बचाओ', पर्यावरण शिक्षण कार्यक्रम, पर्यावरण ज्ञान परीक्षा, ऑक्सीजन बैंक स्थापना, पर्यावरणीय खाता योजना, कृषि एवं पर्यावरण चेतना अभियान, वन्यजीव संरक्षण तथा नदी स्वच्छता जैसे कार्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। प्लास्टिक प्रदूषण के विरुद्ध पर्यावरण सेना ने एंटी–प्लास्टिक गैंग का गठन किया है। इसके माध्यम से 'प्लास्टिक दो, झोला लो' अभियान चलाकर एकल–उपयोग प्लास्टिक के विकल्प अपनाने, घरों और गांवों को स्वच्छ रखने तथा सतत विकास लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर लागू करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। 'हरित भोज' और श्री अन्न को बढ़ावा देने जैसी पहलें भी पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली विकसित करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही हैं। प्रतापगढ़ के लालगंज क्षेत्र में स्थित गौखाड़ी जंगल कभी उजाड़ और वीरान हो गया था। पर्यावरण सेना के प्रयासों और स्थानीय लोगों की भागीदारी से यहां हजारों पेड़ लगाए गए तथा 'जंगल मित्रों' के माध्यम से उनकी सुरक्षा और देखभाल की गई। निरंतर प्रयासों से जंगल में फिर हरियाली लौटने लगी है। उपलब्ध विवरण के अनुसार, अब बारहसिंगा जैसे वन्यजीव भी इस क्षेत्र में अपना आवास बना रहे हैं।

पर्यावरण सेना की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रतापगढ़ की विलुप्तप्राय सकरनी नदी का पुनर्जीवन है। वर्ष 2024 में सरकार और समाज के सहयोग से लगभग दस महीने तक लगातार श्रम एवं प्रयास किए गए। इस अभियान में करीब 30 हजार ग्रामीणों ने सकारात्मक योगदान दिया। सामुदायिक सहभागिता से नदी को पुनर्जीवित करने का कार्य किया गया और उपलब्ध जानकारी के अनुसार, आज नदी अपने मार्ग पर पुनः प्रवाहित हो रही है। नदी के संरक्षण और उसके तटों को हरित बनाने का अभियान अभी भी जारी है।

पर्यावरण संरक्षण, जल संचयन, युवा सहभागिता और सामुदायिक नेतृत्व के क्षेत्र में अजय क्रांतिकारी को विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है।

सकरनी को पुर्नजीवित करने के लिए सम्मानित हुए क्रांतिकारी



जनसंदेश न्यूज

प्रतापगढ़। जल संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए जिले की 28 किमी लंबी विलुप्त सकरनी नदी के पुनरोद्धार की पहल करने वाले जल शक्ति अभियान के ब्रांड एंबेसडर एवं पर्यावरण सेना प्रमुख अजय क्रांतिकारी को नई दिल्ली में सम्मानित किया गया है। दिल्ली स्थित मौर्या होटल में वाटर डाइजेस्ट एवं यूनेस्को द्वारा आयोजित भव्य सम्मान समारोह में वाटर डाइजेस्ट वर्ल्ड वाटर अवार्ड्स रजत-रत्न से अलंकृत किया चौधरी, यूनेस्को के कार्यक्रम विशेषज्ञ बेन्नो बॉयर और वाटर डाइजेस्ट की डायरेक्टर एंड एडिटर अनुपमा माधक सूद ने अवार्ड ट्राफी और प्रमाण-पत्र देकर अजय क्रांतिकारी को सम्मानित किया। जलशक्ति मंत्री ने कहा कि जल संरक्षण हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है।जल अभियान को जल आंदोलन बनाकर जल संरक्षण के प्रयासों को सफल बनाया जा सकता है। अजय क्रांतिकारी ने कहा कि समय रहते हम सभी को जल और पर्यावरण के संरक्षण हेतु न सिर्फ सोचना है बल्कि सार्थक प्रयास करते हुए पीढ़ियों के

30k villagers toil for 10 months to bring a river back on its course

Kapil.Dixit@timesofindia.com

Prayagraj: In an inspiring effort, over 30,000 people belonging to 20 villages in three blocks of Uttar Pradesh's Pratapgarh district toiled for over 10 months to fix the course of a seasonal river that had been encroached upon for over a decade.

As a result, the river had changed its course and had become shallow, rendering it of little or no use to farmers in the region.

In the past decade, the Sakarni (Sanskrit for one who listens), a rivulet that feeds the Sai, a tributary of the Ganga, had seen large-scale encroachment by farmers on its banks, many of whom extended their farmlands onto its riverbed. Consequently, the rivulet changed its course and became shallow in stretches.



The rivulet had seen large-scale encroachment by farmers

A local green activist, Ajay Krantikari, who heads an NGO called Paryavaran Sena, led the campaign to bring the extinct river on its natural course and first raised the issue before the district environment committee which is headed by the district magistrate.

On October 13, 2023, following Krantikari's efforts, the district authorities ordered the inclusion of the Sakarni river under the small rivers' rejuvenation list under MNREGS.

▶ Encroachments, P 3

'Removed encroachments on natural course of river'

▶Continued from P 1

Old revenue records were scanned to find the natural course of the river which was almost lost to the local residents.

In the next 10 months, over 30,000 people worked under MNREGS to bring the river back to its natural 27.7km course. Besides, they also found employment in their respective blocks during the small river rejuvenation work.

"The district administration spent a total of Rs 1.35 crore to make this happen. Pratapgarh district development officer Sunil Krishna said, "The rejuvenation work of the small river Sakarni has been done with the help of villagers. Now, the river is flowing on its natural course. After conducting a detailed survey and analysis, we removed all the encroachments found on the natural course of the river." He also said that the seasonal river is now providing livelihood to people of Laxmanpur and adjoining blocks.



District administration spent a total of Rs 1.35 crore on river rejuvenation work





अब 10 प्लास्टिक दो, एक कपड़े का थैला लो

पर्यावरण संरक्षण



- नगरी क्षेत्रों एवं 100 मीटर की परिधि में प्लास्टिक पर रोक
- प्लास्टिक कचरा लौटाकर लेंगे सब्जी, अनाज, कपड़े सहित अन्य उत्पाद

AKSHAY NAYAK

Kendriya Vihar-2, Sector 82, Noida, UP
Senior Research Fellow, IIT Roorkee



Bamboo-Based Submerged Vanes cleaning Ganga

This initiative illustrates how indigenous materials, scientific research and nature-based engineering can contribute to the development of a more efficient, cost-effective and environmentally responsible inland water transport system in India.

Rejuvenation and Stabilization of the Navigation Channel at Seven Locations on National Waterway-1 River Ganga. Between Varanasi and Patna Using Eco-Friendly, Bamboo-Based Submerged Vanes

An Innovative, Nature-Based Solution for Sustainable Inland Water Transport

Background and Rationale Inland Water Transport (IWT) is one of the most environmentally friendly and cost-effective modes of freight transportation. Due to its high energy efficiency, it generally generates lower greenhouse gas (GHG) emissions per tonne-kilometre than road and rail transport. However, despite India's extensive network of rivers and canals, IWT accounts for only a relatively small share of the country's freight movement. Its modal share is estimated at approximately 2–5%, compared with around 18% in China and 35% in Bangladesh, although these figures vary by source, year and measurement methodology.

Under the PM Gati Shakti National Master Plan, improving logistics efficiency and reducing logistics costs as a proportion of GDP are important national priorities. Inland waterways can play a significant role in achieving these objectives by facilitating efficient, economical and sustainable freight movement. One of the major challenges facing IWT in India is the availability of adequate navigable depth, generally around 2.5–3 metres for the relevant vessel requirements. Conventional dredging can be expensive, energy-intensive and environmentally disruptive if not carefully planned and managed. It may affect riverbed morphology, aquatic habitats and the natural sediment regime, making environmentally sensitive and cost-effective alternatives highly desirable.

The Innovative Intervention To address this challenge, we, at IIT Roorkee, under the guidance of my PhD supervisor, Prof. Nayan Sharma, developed and implemented an innovative, eco-friendly approach to navigation-channel rejuvenation and stabilization at seven selected locations along National Waterway-1 (River Ganga), between Varanasi and Patna.

The intervention involved the installation of bamboo-based submerged vanes—simple, rectangular hydraulic structures constructed using locally available bamboo and assembled in situ. These structures were designed to harness the natural flow energy of the river to influence sediment transport and improve navigable-channel conditions Unlike conventional dredging, which physically removes sediment from the riverbed, this nature-based approach seeks to guide the river's own hydraulic processes to redistribute sediment naturally, thereby helping maintain or improve the depth of the navigation channel.

Working Principle The bamboo-based submerged vanes work by modifying local flow patterns within the river. Their orientation and placement influence the formation of secondary and helical currents, which alter the movement of sediment across the channel. Depending on the angle and configuration of the vanes, these secondary currents help transport sediment away from the navigation channel and towards designated depositional areas near the riverbank, typically downstream of the intervention. This process is intended to improve the navigable depth while supporting channel stability through the natural movement of water and sediment.

The principal advantage of this technique is that it works with the river's natural hydraulic energy rather than relying primarily on mechanical excavation. By using locally available, biodegradable bamboo and avoiding the introduction of conventional foreign construction materials into the river, the intervention offers a potentially lower-impact alternative to traditional channel-maintenance methods.

Results and Key Outcomes

The implementation at the seven selected locations demonstrated encouraging results. Based on the reported observations, an average increase in water depth of approximately one metre was achieved across the intervention sites.

The key outcomes include:

Improved navigable depth: An observed increase in water depth that can support better navigation-channel conditions.

Cost-effectiveness: Use of locally available bamboo and relatively simple construction techniques, potentially reducing material and implementation costs.

Nature-based sediment management: Harnessing natural hydraulic forces to redistribute sediment instead of relying exclusively on mechanical dredging.

Reduced material footprint: Avoiding the need for conventional, heavy structural materials in the intervention itself.

Local resource utilization: Promoting the use of indigenous materials and site-specific engineering solutions.

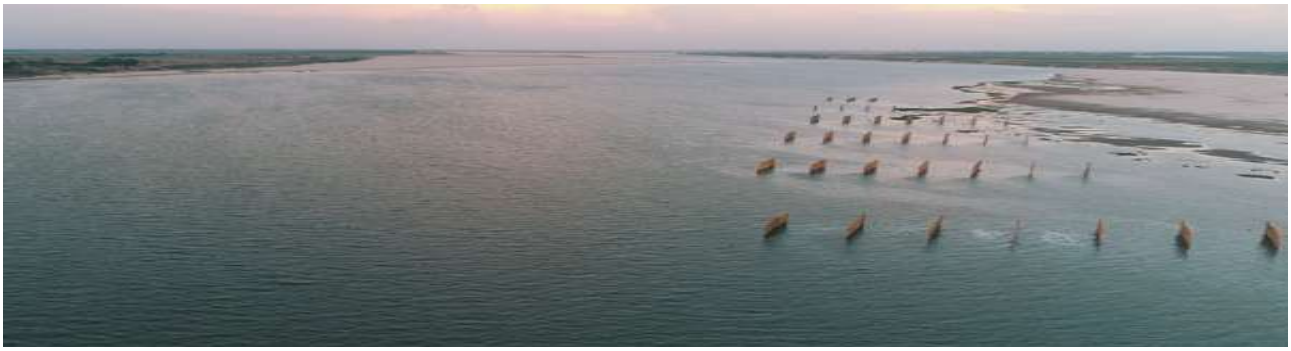
Potential environmental benefits: Offering an alternative that may reduce the ecological disturbance associated with conventional dredging, subject to site-specific environmental assessment and monitoring.

Environmental Significance and Future Potential

The bamboo-based submerged-vane technique represents an innovative convergence of hydraulic engineering, river morphology and nature-based solutions. By working with the river's natural flow and sediment dynamics, it offers a promising approach to improving navigability while seeking to minimize interference with the riverine ecosystem.

Its application along National Waterway-1 highlights the potential of context-specific, low-cost engineering interventions to address the challenges of inland water transportation in India. The approach may also offer lessons for other river stretches facing similar navigation and sediment-management issues, provided that local hydraulic conditions, sediment characteristics, seasonal variations and ecological sensitivities are carefully evaluated.

Further monitoring of channel depth, sediment movement, structural durability, seasonal performance and aquatic ecology would help establish the long-term effectiveness and wider applicability of the technique.

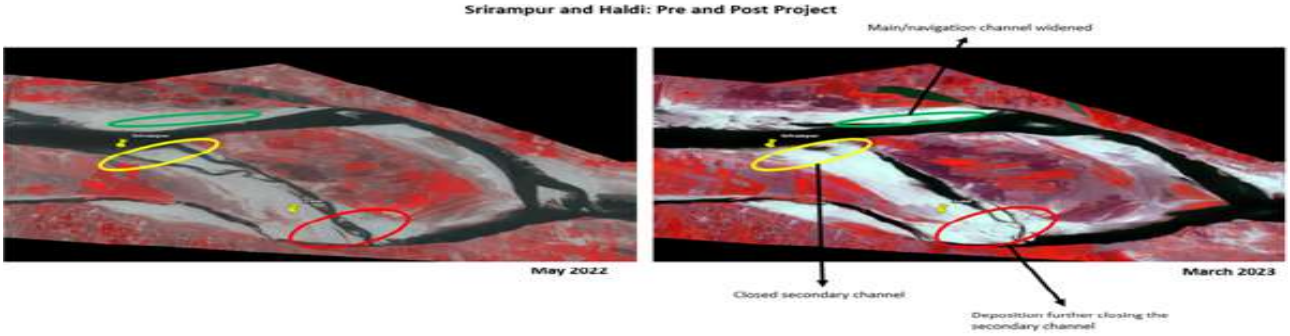








Srirampur and Haldi: Pre and Post Project



ANANDA BHAI N. JAT

Government Primary School Teacher
Jal Sanchay Team, Deesa
Banaskantha, Gujarat



Transforming Water Scarcity into Water Security

I belong to Sherpura village in Deesa Taluka of Banaskantha district, Gujarat, where water scarcity has been a major challenge for generations. In many areas, even borewells drilled to a depth of 1,200 feet fail to provide sufficient water for farming. The devastating floods of 2015 and 2017 made me realise that while our region struggled with water shortages, enormous quantities of precious rainwater were flowing away unused. This inspired me to find a sustainable solution.In 2021, I invested ₹ 14 lakh of my own money to construct a farm pond measuring 110 feet by 110 feet and 27 feet deep. The pond successfully collected rainwater, enabling me to cultivate ten bighas of summer crops and six bighas of winter crops with encouraging yields. My initiative attracted more than 13,000 visitors, including farmers, government officials, and community leaders, inspiring others to adopt rainwater harvesting.To expand this effort, I established the Jal Sanchay Team, Deesa with five dedicated members. Together, we travelled from village to village, educating farmers about farm ponds, groundwater conservation, and government support schemes. Our efforts helped inspire the construction of approximately 15 farm ponds in 2021 and 50 more in 2022.In 2023, the Gujarat government recognised my initiative as a model and launched a pilot project in Banaskantha, supporting farmers with plastic lining material for their ponds. Under this programme, 181 farm ponds were constructed in 2023. Following its success, the scheme expanded to ten districts of Gujarat in 2024. More than 2,000 farm ponds have since been constructed in Banaskantha alone, transforming water-scarce agricultural land into productive green fields. I also advocated for five-horsepower electricity connections to help farmers utilise stored water efficiently.

As a teacher and farmer, I believe that true change begins with awareness, determination, and community participation. What started as one farm pond has grown into a movement for water self-reliance. My mission is to encourage every farmer to harvest rainwater, recharge wells and borewells, and protect every precious drop.I firmly believe that when we conserve water, we do not merely save a natural resource; we secure agriculture, strengthen rural livelihoods, and safeguard the future of coming generations.















ઘટતા ભુગર્ભ જળની સ્થિતિમાં નવા પ્રયોગને સફળ બનાવાયો

બનાસકાંઠા જિલ્લામાં ૪૦૦ થી વધુ ખેતલાવડી અત્યાર સુધી તૈયાર થઈ

ડીસાના સેરપુરા ગામના ખેડૂતની પહેલ સૌના માટે પ્રેરણાદાયી બની



ડીસાના ધારાસભ્ય પ્રવીણભાઈ માળીના સ્વપ્નનું

પાણીદાર ડીસા બનાવવા માટે પેછડાલ ગામે મીટીંગ યોજાઈ



(સદામ મેમણ)

બી.કે.ન્યૂઝ : લાલપુર

ડીસા તાલુકાના ગામડાંઓમાં પાણી પ્રત્યે જાગૃતિ આવે એના માટે જળ સંચયની ટીમ અને ડીસાના ધારાસભ્ય શ્રી પ્રવીણભાઈ માળીના સ્વપ્નને સાકાર કરવા ગામડા ગામે મીટિંગો યોજી રહ્યા છે.

આગામી સમયમાં ડીસા તાલુકાના વધારેમાં વધારે ગામ વિસ્તાર, કુવા રિચાર્જ અને ખેત તલાવડીનો લાભ લેવા માટે ડીસાના ધારાસભ્ય પ્રવીણભાઈ માળી, અલ્પાભાઈ જાટ, પ્રતાપભાઈ જાટ, દશરથભાઈ જાટ, રમેશભાઈ ચૌધરી અને મુકેશભાઈ ચૌધરી ની ટીમ દ્વારા સતત મુલાકાત લઇ વરસાદ આવે એ અગાઉ પેછડાલ ગામે મિટિંગ યોજાઈ. ડીસાને પાણીદાર ડીસા બનાવવા માટે જળ સંચયની વિગતવાર ચર્ચા વિચારણા થઈ. જેમા ગામના સરપંચ શિવરામભાઈ ચૌધરી, જળ સંચયની ટીમ અને મોટી સંખ્યામાં પેછડા ગ્રામજનો હાજર રહ્યા હતા. (સદામ મેમણ)











જળ સંચયનું કામ ઝડપી બને એના માટે વરણ ગામે સેમિનારનું આયોજન



(સદામ મેમણ)

બી.કે.ન્યૂઝ : લાલપુર

ડીસાના જળ સંચયની ટીમ અને અટલ ભુજલ યોજના ટીમ દ્વારા વરણ ગામના લોકોને જળ સંચય દ્વારા ગામ તળાવ, ખેત તલાવડી, બોર રિચાર્જ, કુવા રિચાર્જ વગેરે વિશેની વિગતવાર ચર્ચાઓ કરવામાં આવી. આ કાર્યક્રમમાં પ્રગતિશીલ ખેડૂત શિક્ષક અલ્પાભાઈ જાટ, પ્રતાપભાઈ જાટ, દશરથભાઈ જાટ, વરણ ગામના સરપંચ નાગજીભાઈ, તાલુકા પંચાયતના ડેલિકેટ અમરસિંહ દરબાર, અટલ ભુજલ માંથી પટેલ રૂપસીભાઈ અને મોટી સંખ્યામાં ગ્રામજનો હાજર રહ્યા હતા.









अनीता पालीवाल

ग्राम पंचायत पिपलांत्रीए राजसमंद, राजस्थान,



बेटी के साथ बढ़ते हैं पेड़, हरियाली और पानी

परिचय–राजस्थान के पिपलांत्री ने जल संकट से उबरने के लिए इंटीग्रेटेड मॉडल बेटी बचाओ, पानी बचाओ और पेड़ लगाओ को अपनाया।

देश भर में पौधे लगाए तो जाते हैं लेकिन उनकी देखरेख भी उसी उत्साह से हो यह पिपलांत्री में सुनि चित किया जा रहा है यहां बेटी के जन्म पर रोपे 111 पौधे बेटियों की तरह ही पाले जाते हैं। पंचायत बेटी के जन्म पर परिवार और ग्रामीणों द्वारा 31 हजार रूपए फिक्स डिपॉजिट कराती है, जो 18 वर्ष की आयु पूरी होने पर मिलती है।

पौधे बचाए रहें तो पानी बचेगा इसीलिए पेड़ों को दीमक से बचाने के लिए उनके आसपास एलोवेरा लगाया जाता है, जिससे ग्रामीणों की आजीविका भी चलती है। यहाँ की बेटियाँ रक्षाबंधन पर भाइयों के साथ–साथ इन पेड़ों को भी राखी बाँधती हैं।

इस प्रेरणादायक मॉडल की शुरुआत पूर्व सरपंच श्याम सुंदर पालीवाल ने अपनी दिवंगत बेटी किरण की याद में की थी।

इस अनूठी पहल के कारण पिपलांत्री की कहानी देश ही नहीं बल्कि डेनमार्क जैसे विदेशों के स्कूलों में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती है।

गांव को पानीदार बनाने के लिए एनीकट, चेक डैम और कंटूर ट्रेंच का निर्माण किया गया। भूजल को फिर से भरना (रीचार्ज) और पारंपरिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित किया गया ताकि आसपास में पानी की उपलब्धता रहे, हरियाली बढती रही।

इस पूरी प्रक्रिया में सामुदायिक भागीदारी और जल साक्षरता को सबसे उपर रखा गया–

भूजल बहाली, लगातार रीचार्ज प्रयासों से पंचायत में स्थानीय जल स्तर स्थिर हुआ है और बढ़ा है।

वनीकरण और माइक्रो–क्लाइमेट, लाखों फलते–फूलते पेड़ों ने हरियाली बढ़ाई है, मिट्टी की नमी में सुधार किया है और एक अनुकूल स्थानीय माइक्रो–क्लाइमेट बनाया है।

कृषि स्थिरता, पानी की विश्वसनीय उपलब्धता से कई फसलें उगाना संभव हुआ है, मजबूरी में होने वाले पलायन में कमी आई है और ग्रामीण आय स्थिर हुई है।

वैश्विक बेंचमार्क, पिपलांत्री ग्रामीण जलवायु लचीलेपन का अध्ययन करने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों के लिए एक जीवंत शिक्षण प्रयोगशाला के रूप में काम करता है।

भविष्य की सोच – पिपलांत्री को पूरी तरह से वाटर न्यूट्ल व क्लाइमेट रेजिलिएंट गांव बनाने के लिए काम किया जा रहा है। इसमें ये उपाय किए जा रहे हैं जियोस्पेशियल टूल्स के माध्यम से मैपिंग करके सटीक वर्षा जल संचयन किया जाए। कृषि और वानिकी में घरेलू अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग के लिए 100 फीसद ग्रे–वॉटर रीसाइक्लिंग सिस्टम काम करे।






नाम- दिशा ,माता-
पिता - शम्भू सिंह

अंकित कुमार

देवघर, झारखंड, संस्था, प्रवाह



पानी की हर बूंद बने किसी परिवार के फलने–फूलने का अवसर

प्रवाह का मुख्य इनोवेशन जल–संरक्षण को उत्पादक इस्तेमाल से जोड़ना है, जिसका एक आसान तरीका है, बारिश का पानी – संरक्षण – रिचार्ज – सिंचाई – उत्पादन – आय – मजबूती।

वर्श 2015 से, प्रवाह ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के साथ मिलकर समुदाय के नेतृत्व में जल संरक्षण, टिकाऊ खेती और मजबूत आजीविका को बढ़ावा देने का काम कर रही है। प्रवाह का मानना है कि बचाई गई पानी की हर बूंद किसी परिवार के फलने–फूलने का अवसर बननी चाहिए। इसी सिद्धांत ने एक ऐसा एकीकृत तरीका तैयार किया है जो जल सुरक्षा को खाद्य सुरक्षा, कृषि उत्पादकता, महिला सशक्तिकरण, आजीविका और जलवायु के प्रति लचीलेपन से जोड़ता है। जल संरक्षण से जल सुरक्षा तक, प्रवाह का तरीका सिर्फ जल–संचयन के ढांचे बनाने से कहीं आगे है।

स्थानीय ज्ञान, भागीदारी वाली योजना और सही तकनीकी समाधानों को मिलाकर लैंडस्केप–आधारित, प्रकृति–अनुकूल और समुदाय के स्वामित्व वाले जल प्रबंधन को बढ़ावा देता है। मुख्य कामों में तालाब, डोभा (छोटे तालाब), ट्रेंच–कम–बंड (खाई और मेड़), पानी सोखने के उपाय, चेक डैम, खेत की मेड़बंदी, भूजल रिचार्ज, सौर सिंचाई, ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंग–शेड (जल–स्रोत क्षेत्र) प्रबंधन शामिल हैं। ये उपाय बारिश का पानी जमा करने, पानी के बहाव को कम करने, मिट्टी की नमी बनाए रखने, भूजल को रिचार्ज करने और खेती के लिए पानी की उपलब्धता बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किए गए हैं। प्रवाह प्रकृति–आधारित समाधानों को बढ़ावा देती है और गहरे बोरवेल पर बहुत ज़्यादा निर्भरता को हतोत्साहित करती है, क्योंकि इससे भूजल भंडार पर दबाव पड़ सकता है। खेती की योजना पानी की उपलब्धता और फसल की उपयुक्तता के अनुसार बनाई जाती है, जिससे किसानों को बचाए गए पानी का कुशलतापूर्वक और टिकाऊ ढंग से उपयोग करने में मदद मिलती है। इसकी एक मुख्य विशेषता श्जल उपयोगकर्ता समूहोंश का गठन और उन्हें मजबूत करना है, जिससे समुदाय जल संसाधनों की योजना बनाने, उन्हें लागू करने, उनका प्रबंधन करने और उनकी सुरक्षा करने में भाग ले सकें। इसलिए, जल संपत्तियों को केवल अलग–थलग बुनियादी ढांचे के रूप में नहीं, बल्कि समुदाय के स्वामित्व वाले संसाधनों के रूप में देखा जाता है जो लंबे समय तक पारिस्थितिक और आर्थिक मूल्य पैदा करते हैं।

कितने लोगों को कहां हुआ लाभ

वर्श 2015 से अब तक, प्रवाह के प्रयासों से झारखंड और पड़ोसी बिहार के 263 गाँवों और लगभग 5,260 परिवारों तक मदद पहुँची है। जिला, ब्लॉक गाँव परिवार खूँटी 18 360 दुमका, जामा जरमुंडी 90 1,800 दुमका, रामगढ़ 20400 साहिबगंज, बरहेट 20400, दुमका जामा 40800 पाकुड़, महेशपुर 5100 पाकुड़, लिट्टीपाड़ा 20400 लखीसराय, बिहार 501,000 कुल 2635,260 जल–संसाधन बनाना और बहाल करना, इस दौरान, जल–संरक्षण के अहम कामों में मदद की है, जिनमें 2,500 से ज़्यादा तालाब, 1,000 से ज़्यादा डोभा (छोटे तालाब) और 700 हेक्टेयर से ज़्यादा जमीन पर ट्रेंच–कम–बंड (खाई और मेड़) बनाना शामिल है। ये उपाय बारिश के पानी को रोकने, मिट्टी की नमी बनाए रखने और भूजल को रिचार्ज करने में मदद करते हैं, साथ ही खेती के लिए हालात बेहतर बनाते हैं। प्रवाह के वॉटरशेड से जुड़े व्यापक अनुभव में अमृत सरोवर, चेक डैम, पानी सोखने वाली खाइयाँ, खेतों की मेड़बंदी, पत्थर के ढीले ढाँचे, सोलर सिंचाई और स्प्रिंग–शेड (झरने वाले इलाकों में जल–संरक्षण) जैसे काम भी शामिल हैं। इन्हें खेती और आजीविका की योजना के साथ जोड़ा गया है ताकि बड़े स्तर पर बचाया गया पानी परिवारों के स्तर पर ठोस फायदा पहुँचा सके। जल सुरक्षा से आजीविका सुरक्षा, प्रवाह का मुख्य इनोवेशन जल–संरक्षण को उत्पादक इस्तेमाल से जोड़ना है, जिसका एक आसान तरीका है, बारिश का पानी – संरक्षण – रिचार्ज – सिंचाई – उत्पादन – आय – मजबूती। जब कोई तालाब एक अतिरिक्त फसल उगाने में मदद करता है, तो वह सिर्फ पानी का ढाँचा नहीं रह जाता। जब कोई डोभा सिंचाई और पशुओं की जरूरतों को पूरा करता है, तो वह ज़्यादा फायदेमंद होता है। जब ट्रेंच–कम–बंड पानी के बहाव को कम करता है, मिट्टी की नमी बनाए रखता है और खेत की पैदावार बढ़ाता है, तो यह बदलाव लाने वाला साबित होता है। यह तरीका किसान परिवारों को अनिश्चित बारिश पर निर्भरता कम करने और कई तरह की फसलें उगाने, बागवानी, किचन गार्डन और आजीविका के दूसरे कामों के जरिए उत्पादन में विविधता लाने में मदद करता है। पानी की बेहतर उपलब्धता से परिवारों की खाद्य सुरक्षा, आय और मुश्किल हालात का सामना करने की क्षमता में सुधार

होता है। सामुदायिक संस्थाएँ और महिलाओं की भागीदारीरू श्प्रवाहश मानता है कि पानी का टिकाऊ प्रबंधन मजबूत सामुदायिक संस्थाओं पर निर्भर करता है। श्वॉटर यूजर ग्रुप्सश (पानी इस्तेमाल करने वाले समूह) समुदायों के लिए ऐसे मंच बनाते हैं जहाँ वे मिलकर पानी के इस्तेमाल की योजना बना सकें, जरूरी कामों को प्राथमिकता दे सकें, संपत्तियों का प्रबंधन कर सकें और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा कर सकें। इस नजरिए में महिलाओं की भागीदारी भी बहुत अहम है, खासकर खेती, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और घर की आजीविका से जुड़े फैसलों में। पानी की सुरक्षा को महिलाओं की आर्थिक भागीदारी से जोड़ने पर खाद्य सुरक्षा, आजीविका के अलग–अलग जरीये और परिवारों की मुश्किलों से निपटने की क्षमता मजबूत होती है। बड़े स्तर पर काम करने के लिए साझेदारीरू श्प्रवाहश के काम को कई बड़े डेवलपमेंट, ब्रै और संस्थागत सहयोगियों का साथ मिला है, जिनमें नाबार्ड, झारखंड जल छाजन योजना, एचडीएफसी, आईटीसी, एसबीआई फाउंडेशन और अन्य शामिल हैं। इन साझेदारियों की वजह से प्रवाह सामुदायिक भागीदारी को संस्थागत संसाधनों, तकनीकी मदद और कार्यक्रमों के तालमेल के साथ जोड़ पाया है। श्प्रवाहश की खासियतरू श्प्रवाहश के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर (बुनियादी ढांचा) एक जरिया है, समुदाय की खुशहाली ही इसका नतीजा है।







भूपेंद्र पालीवाल

ऑर्गनाइजेशन– राम कृष्ण जयदयाल डालमिया
सेवा संस्थान, चिड़ावा राजस्थान



बार–बार सूखे पर योजना, इच्छाथक्ति का प्रहार, इलाका बना पानीदार

रैन वाटर हारवेस्टिंग, ग्राउंड वाटर कंजरवेशन के प्रयासों से 4,505 रैनवाटर हारवेस्टिंग टैंक बनाए गए हैं, जिनसे लगभग 59,841 लोगों को फायदा हुआ है और इनकी सालाना स्टोरेज क्षमता लगभग 8.30 करोड़ लीटर है। इन उपायों से 93 करोड़ लीटर से ज्यादा रैनवाटर जमा किया गया है।

रामकृष्ण जयदयाल डालमिया सेवा संस्थान की स्थापना 2004 में पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ और आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदाय बनाने की दृष्टि से की गई थी। एक परियोजना प्रबंधक और संगठन की परियोजना प्रबंधन टीम के सदस्य के रूप में, मैंने ग्रामीण गरीबी, जल असुरक्षा और पर्यावरणीय गिरावट के मूल कारणों पर काम शुरू किया। इसमें समुदायों, सरकारी विभागों, वित्तीय संस्थानों, विकास एजेंसियों, सीएसआर भागीदारों और अन्य हितधारकों को जोड़ा।

इस पूरे काम में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र वर्षा जल संचयन और भूजल संरक्षण रहा। राजस्थान को बार–बार सूखे और गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ता है, जिससे ग्रामीण आजीविका और मानव कल्याण के लिए पानी की हर बूंद का संरक्षण आवश्यक हो जाता है। राजदएसएस की पहल और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से, 4,505 वर्षा जल संचयन टैंकों का निर्माण किया गया है, जिससे लगभग 59,841 लोग लाभान्वित हुए हैं। इन संरचनाओं की वार्षिक भंडारण क्षमता लगभग 8.30 करोड़ लीटर है, जबकि इन पहलों के माध्यम से संचयी वर्षा जल संचयन 93 करोड़ लीटर से अधिक हो गया है।

भूजल संसाधनों को और मजबूत करने के लिए, हमने 128 पुनर्भरण कुओं, 3,409 सोख गड्ढों और छह सामुदायिक तालाबों के निर्माण में सहयोग किया। इससे 158 करोड़ लीटर से अधिक भूजल के पुनर्भरण में योगदान मिला और 30,000 से अधिक ग्रामीणों को लाभ हुआ है। संख्या से परे, इन प्रयासों ने जल सुरक्षा में सुधार करने और सूखे और जलवायु संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए ग्रामीण समुदायों की क्षमता को मजबूत करने में मदद की है।

पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिक बहाली भी मेरे काम के केंद्र में रहे हैं। यह मानते हुए कि जल सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, मैंने सक्रिय रूप से वृक्षारोपण और ग्रीन कवर का समर्थन किया। सामुदायिक भागीदारी और संस्थागत भागीदारी के माध्यम से, चार लाख से अधिक पेड़ लगाए और 1,084 बागवानी उद्यान स्थापित किए हैं। इससे ग्रीन कवर, जैव विविधता, मिट्टी के स्वास्थ्य और ग्रामीण क्षेत्रों के पारिस्थितिक लचीलेपन में सुधार करने में योगदान दिया है, साथ ही पूरक आजीविका के अवसर भी पैदा किए हैं।

मेरा विश्वास है कि सतत ग्रामीण विकास में टिकाऊ कृषि शामिल होनी चाहिए। किसान उन समुदायों में से हैं जो पानी की कमी और बदलती जलवायु परिस्थितियों से सबसे अधिक सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं। इसलिए, मैंने जलवायु–लचीली कृषि पद्धतियों, जैविक खेती, जल–कुशल प्रौद्योगिकियों, मृदा संरक्षण और बेहतर कृषि–प्रबंधन पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए किसानों के साथ काम किया है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रदर्शनों, जागरूकता गतिविधियों और क्षेत्र–स्तरीय हस्तक्षेपों के माध्यम से, राजदएसएस पहल 15,350 हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि पर लगभग 7,850 किसानों तक पहुंच गई है।

मेरे काम का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य रहा है। विभिन्न पहलों के माध्यम से, राजदएसएस ने 2,361 घरेलू शौचालयों के निर्माण की सुविधा प्रदान की है और उन प्रयासों में योगदान दिया है जिससे 89 गांवों को खुले में शौच से मुक्त होने में मदद मिली है। इन सभी पहलों के केंद्र में सामुदायिक भागीदारी है। मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया है कि विकास सबसे अधिक टिकाऊ होता है। इस सफर में रघु हरी डालमिया जी व मेरे संस्थान का सबसे बड़ा योगदान है तभी पूरे इलाके को पानीदार बनाया जा सका।


राजस्थान सरकार
जिला प्रशासन झुंझुनू
प्रशस्ति-पत्र












12/09/2017



दशरथ शर्मा

ग्राम लापोडिया, दूदू – जयपुर
सामाजिक कार्य, वरिष्ठ परियोजना समन्वयक,
ग्राम विकास नवयुवक मण्डल लापोडिया



दादी ने सिखाया पाठ, समुदायिक भागीदारी से जमीन पर उतारा, इलाके में पहुंचा पानी

गांव–गांव पहुंचे और ग्रामीणों को साथ लेकर तालाबों की साफ–सफाई, जल स्रोतों के संरक्षण तथा उनके रख–रखाव के लिए सामूहिक प्रयास किए।

वर्ष 2006 से 2026 तक राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में ''जल संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, सामुदायिक सशक्तिकरण, महिला सहभागिता तथा पर्यावरण संरक्षण'' के क्षेत्र में निरंतर एवं उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका कार्य केवल जल संकट से जूझ रहे ग्रामीण समुदायों को राहत प्रदान करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने जल संरक्षण को जनभागीदारी, स्थानीय नेतृत्व और सामुदायिक जिम्मेदारी से जोड़कर एक स्थायी विकास मॉडल प्रस्तुत किया है।

बचपन में अपनी दादी माँ से भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन प्रसंग सुनते हुए उनके मन में जीव–जंतुओं के प्रति करुणा, प्रकृति के प्रति सम्मान और समाज सेवा की भावना विकसित हुई। पदमश्री लक्ष्मण सिंह के कार्यों और विचारों से प्रेरित हुए। इसी प्रेरणा से वर्ष 2006 में उन्होंने संस्था के साथ जुड़कर स्वयंसेवक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। पिछले दो दशकों में उन्होंने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जल एवं पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक सरोकार और जन–अभियान का स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों का गठन एवं क्षमता निर्माणः वर्ष 2006 से विभिन्न गाँवों में ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों'' के गठन और उनके क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान दिया। इन समितियों के माध्यम से स्थानीय समुदायों को जल प्रबंधन, जल आपूर्ति, स्वच्छता तथा जल स्रोतों के संरक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गई।

प्रशिक्षण एवं निरंतर मार्गदर्शन के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण समुदायों को अपने जल संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए सक्षम बनाया तथा स्थानीय स्तर पर नेतृत्व विकसित किया।

धरती जतन यात्रा– इस यात्रा के माध्यम से लगातार गांव–गांव पहुंचे और ग्रामीणों को साथ लेकर तालाबों की साफ–सफाई, जल स्रोतों के संरक्षण तथा उनके रख–रखाव के लिए सामूहिक प्रयास किए। तालाबों के पूजन और उनके संरक्षण का संकल्प करवाकर उन्होंने जल स्रोतों को केवल उपयोग की वस्तु न मानकर ''गाँव की सामूहिक धरोहर'' के रूप में देखने की भावना विकसित की। वर्ष 2006 से निरंतर चल रही इस पहल ने ग्रामीणों में जल संरक्षण, प्रकृति के प्रति सम्मान और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत किया।

जल प्रबंधन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में ''महिला मंडलों का गठन'' किया। महिलाओं को जल संरक्षण, स्वच्छता और स्थानीय निर्णय प्रक्रिया से जोड़ने के प्रयास किए गए।

इस पहल से महिलाओं की भागीदारी बढ़ी और जल एवं स्वच्छता से जुड़े विषयों पर सामुदायिक निर्णयों में उनकी भूमिका अधिक प्रभावी हुई। इस प्रकार जल संरक्षण के साथ–साथ ''महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशिता'' को भी बढ़ावा मिला।

जल आपूर्ति एवं संरक्षण से जुड़ी परियोजनाओं में ''सूचना, शिक्षा एवं संचार गतिविधियों'' के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को जल के विवेकपूर्ण उपयोग, स्वच्छता, जल स्रोतों की सुरक्षा तथा वर्षा जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। ताकि ग्रामीणों के व्यवहार और सोच में सकारात्मक बदलाव लाकर जल संरक्षण को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना था।

चौका प्रणाली का पुनर्जीवन–राजस्थान की पारंपरिक ''चौका प्रणाली'' को पुनर्जीवित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। वर्षा जल को स्थानीय स्तर पर रोकने, भूमि में नमी बनाए रखने और भू–जल पुनर्भरण को बढ़ावा देने वाली इस पारंपरिक तकनीक को ग्रामीण समुदायों के साथ मिलकर पुनः उपयोग में लाया गया। इस पहल ने सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जल उपलब्धता, भूमि की नमी तथा कृषि गतिविधियों को अधिक टिकाऊ बनाने में योगदान दिया।

प्रत्येक वर्ष ''विश्व जल दिवस'' के अवसर पर दशरथ शर्मा द्वारा विभिन्न गाँवों में जन–जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से जल संकट, जल संरक्षण की आवश्यकता, स्थानीय जल स्रोतों की सुरक्षा तथा सामुदायिक भागीदारी जैसे विषयों पर ग्रामीणों को जागरूक किया गया।

विभिन्न गाँवों में ''मृदा एवं जल संरक्षण'' से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया। इन प्रयासों का उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता एवं जल धारण क्षमता में सुधार करना, वर्षा जल के बहाव को नियंत्रित करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दशरथ शर्मा के नेतृत्व एवं सहभागिता से लगभग ''200 गाँवों में वृक्षारोपण अभियान'' चलाए गए। वर्ष 2006 से 2026 तक के उनके सतत प्रयासों से ''जयपुर, टोंक एवं भीलवाड़ा जिलों के लगभग 3,268 गाँवों के 5 लाख परिवारों'' तक जल संरक्षण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं सामुदायिक सशक्तिकरण से संबंधित कार्यों का प्रभाव पहुँचा है।








OPPO F27 Pro+ 5G

रामेश्वर सैनी

ग्राम विकास नवयुवक मंडल, लापोड़िया,
फुलेरा, राजस्थान



राजस्थान के गांवों में जल संरक्षण, जल स्रोत संरक्षण का दिखाया समर्पण

राजस्थान के नमक उत्पादन वाले गांव हों या सूखे से त्रस्त इलाके, उन्होंने एक बार ठानी तो आ ही गया जल स्रोत में पानी।

गांवों में जल प्रबंधन कार्यों की मास्टर प्लानिंग ग्रामवासियों के साथ मिलकर पंचायतों के साथ समन्वय स्थापित किया तथा ग्रामवासियों को अपनी जन्मभूमि से दिल और मन से जोड़कर जल संरक्षण कार्यों में सक्रिय किया। उनका कार्यक्षेत्र जयपुर जिले के दूदू व सांभर लेक ब्लॉक, टोंक जिले का मालपुरा ब्लॉक तथा पाली जिले का देसूरी ब्लॉक रहा है।

इन क्षेत्रों में उन्होंने 200 ग्राम विकास समितियों और 125 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया। गांवों में एनिकट निर्माण, चारागाहों में चौका प्रणाली का विकास, नहर निर्माण, नाड़ा–नाड़ियां निर्माण, तालाब निर्माण एवं मरम्मत, वन्यजीव पेयजल टांका निर्माण, जल संग्रहण टांका निर्माण, फार्म पौंड निर्माण तथा देवबनिया लगाने जैसे कार्य किए।

इस कार्य की प्रेरणा उन्हें संस्था के सचिव लक्ष्मण सिंह जी से मिली। उन्होंने सिखाया कि गांव में किस प्रकार संवाद करना चाहिए, जल पर्यावरण के प्रति समर्पित लोगों की पहचान कैसे करनी है और असामाजिक तत्वों से दूरी बनाए रखनी है। उन्होंने यह भी बताया कि गांव में अपनी साख स्थापित करना और लोगों का विश्वास जीतना अत्यंत आवश्यक है।

संस्था द्वारा समय–समय पर प्रशिक्षण एवं शैक्षिक भ्रमण आयोजित किए गए, जिससे उनकी क्षमता में वृद्धि हुई और कार्य करने की दिशा स्पष्ट हुई। मालपुरा ब्लॉक के 40 गांवों के 600 परिवार, सांभर ब्लॉक के 10 गांवों के 900 परिवार, दूदू ब्लॉक के 20 गांवों के 1500 परिवार तथा देसूरी ब्लॉक के 15 गांवों के 750 परिवारों को जल प्रबंधन एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण कार्यों से जोड़ा गया।

इन परिवारों ने सामूहिक भागीदारी से जल संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके लिए यह कार्य केवल आजीविका या जिम्मेदारी नहीं, बल्कि धरती मां की सेवा का एक संकल्प है।

जल संरक्षण, चारागाह विकास और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के माध्यम से ग्रामीण समाज को आत्मनिर्भर बनाना उनका ध्येय रहा है। इस यात्रा में उन्हें ग्रामवासियों का सहयोग, संस्था का मार्गदर्शन और प्रकृति का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।









श्री दिलीप भाई सखिया

गिरगंगा परिवार ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी और अध्यक्ष
राजकोट – गुजरात



हर हिस्से में बनें तालाब, एक लाख 11 हजार का है लक्ष्य

गिरगंगा परिवार ट्रस्ट ने 19,600 से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण और जीर्णोद्धार में मदद की है, अनुमानतः 191 बिलियन लीटर पानी की भंडारण क्षमता और 69 बिलियन लीटर से अधिक की वार्षिक भूजल रिचार्ज क्षमता तैयार हुई है।

पानी जीवन, खेती, इकोसिस्टम और ग्रामीण समृद्धि का आधार है। गिरगंगा परिवार ट्रस्ट, जो गुजरात में स्थित एक नॉन–प्रॉफिट संस्था है और 2017 में शुरू हुई थी, सूखे की मार झेलने वाले सौराष्ट्र इलाके में वैज्ञानिक, समुदाय–आधारित और टिकाऊ जल संरक्षण पहलों के जरिए जल सुरक्षा को बहाल करने के लिए समर्पित है। पिछले कुछ सालों में, गिरगंगा वॉटरशेड डेवलपमेंट और भूजल रिचार्ज के क्षेत्र में काम करने वाली भारत की प्रमुख जमीनी स्तर की संस्थाओं में से एक बनकर उभरी है।

संस्था का मानना है कि बारिश की हर बूंद को वहीं संरक्षित किया जाना चाहिए जहाँ वह गिरती है, जिससे भूजल भंडार मजबूत हों, टिकाऊ खेती सुनिश्चित हो और ग्रामीण आजीविका में सुधार हो। ट्रस्ट स्थानीय समुदायों, ग्राम पंचायतों, किसानों, सरकारी विभागों, सीएसआर भागीदारों और तकनीकी विशेषज्ञों के साथ सक्रिय साझेदारी के माध्यम से काम करती है।

संस्था समुदायों को पानी की कमी वाले स्थानों की पहचान करने, तकनीकी रूप से सही बहाली योजनाएँ तैयार करने और आधुनिक इंजीनियरिंग प्रथाओं के साथ पारंपरिक स्थानीय ज्ञान का उपयोग करके टिकाऊ जल संरक्षण संरचनाओं को लागू करने के लिए प्रेरित और संगठित करती है। अब तक, गिरगंगा परिवार ट्रस्ट ने 19,600 से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण और जीर्णोद्धार में मदद की है, जिनमें चेक डैम, रिचार्ज बोर सिस्टम, परकोलेशन पिट्स, गाँव के तालाब और भूजल रिचार्ज के अन्य उपाय शामिल हैं।

इन पहलों से अनुमानित 191 बिलियन लीटर पानी की भंडारण क्षमता और 69 बिलियन लीटर से अधिक की वार्षिक भूजल रिचार्ज क्षमता तैयार हुई है, जिससे सैकड़ों गाँवों में पानी की उपलब्धता में काफी सुधार हुआ है। इन उपायों का प्रभाव पानी के भंडारण से कहीं आगे तक फैला हुआ है। 11.41 लाख से ज्यादा ग्रामीण नागरिकों को पीने के पानी की बेहतर सुरक्षा, सिंचाई की बेहतर सुविधा, खेती की पैदावार में बढ़ोतरी, पलायन में कमी और जलवायु के प्रति मजबूती जैसे फायदे सीधे या परोक्ष रूप से मिले हैं। लगभग 7.38 लाख एकड़ कृषि भूमि को भूजल पुनर्भरण और सिंचाई सहायता में सुधार से लाभ हुआ है।

टाटा हिताची, रोलेक्स रिंग्स, बालाजी वेफर्स, लिगेसी कमोडिटी प्राइवेट लिमिटेड और कई अन्य कई संगठनों के सहयोग से बड़े पैमाने पर सामुदायिक जल संरक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक लागू किए हैं।

ये साझेदारियां एक ऐसा मॉडल दिखाती हैं जिसे बड़े पैमाने पर अपनाया जा सकता है, जहाँ कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के संसाधनों को प्रभावी ढंग से मापने योग्य पर्यावरणीय और सामाजिक परिणामों में बदला जाता है। संगठन ने एक मजबूत कार्यान्वयन प्रणाली विकसित की है जिसमें वैज्ञानिक योजना, ळपै–आधारित निगरानी, फील्ड सत्यापन, इंजीनियरिंग पर्यवेक्षण, डिजिटल दस्तावेजीकरण, वित्तीय पारदर्शिता और तीसरे पक्ष द्वारा प्रभाव का आकलन शामिल है। सामुदायिक भागीदारी हर पहल के केंद्र में रहती है, जिससे बनाई गई संपत्तियों का दीर्घकालिक स्वामित्व और स्थिरता सुनिश्चित होती है। नवाचार के महत्व को पहचानते हुए, गिरगंगा मशीनीकृत गाद हटाने, भूजल पुनर्भरण इंजीनियरिंग, विकेंद्रीकृत जल संचयन और जलवायु–अनुकूल वाटरशेड प्रथाओं को शामिल करता है। संगठन जल संरक्षण की संस्कृति बनाने के लिए जागरूकता अभियान, किसान बैठकें, स्कूल कार्यक्रम, जल कथा पहल और सामुदायिक लामबंदी कार्यक्रम भी सक्रिय रूप से आयोजित करता है। उद्दे य है, राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मान्यता मिली है।

भविष्य को देखते हुए, गिरगंगा ने पूरे भारत में 1 लाख,11 हजार,1 सौ 11 जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण और जीर्णोद्धार की सुविधा प्रदान करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। नवाचार, साझेदारी, सामुदायिक भागीदारी और वैज्ञानिक योजना के माध्यम से, संगठन का लक्ष्य भारत के जल सुरक्षा मिशन और जलवायु लचीलेपन के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देना है। गिरगंगा परिवार ट्रस्ट का काम यह दिखाता है कि सामूहिक कार्रवाई, सामुदायिक स्वामित्व और जिम्मेदार जल प्रबंधन पानी की कमी वाले क्षेत्रों को लचीले और समृद्ध परिदृश्य में बदल सकते हैं।













डॉ. मीनू खरे

ब्लू ड्रॉप फाउंडेशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश



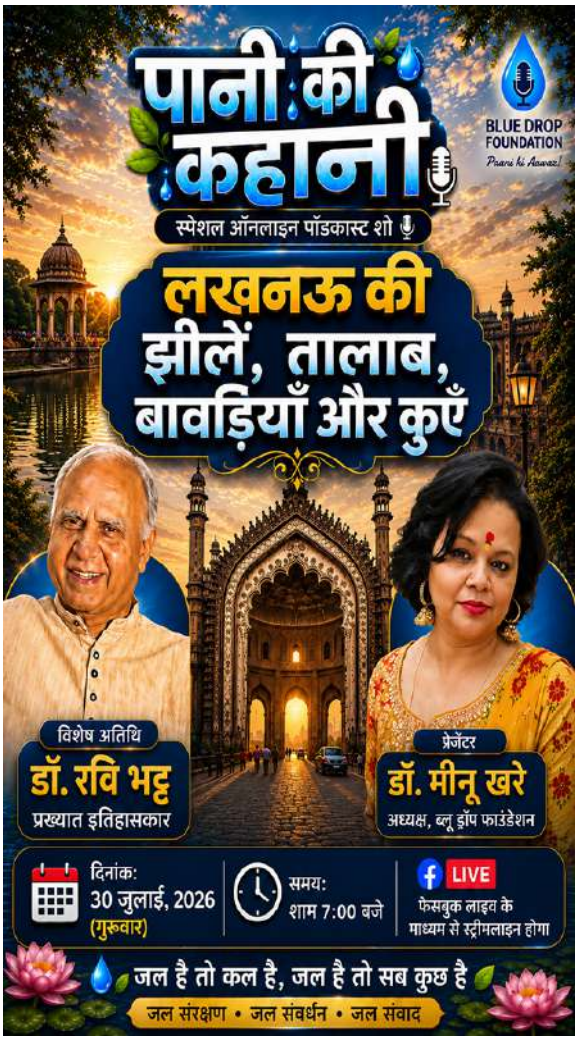
रेडियो पर जब खनकती हैं पानी की बूंदे, सज जाती है बूंदों की महफिल

फावडा लेकर जो चले नदी बचाने, उसके लिए किसी ने बजाए खूबसूरत गाने, पहला पानी पर रेडियो बना तो गीत भी सुने सुहाने

जल संरक्षण के लिए जमीन पर काम करने वालों के काम को अगर–अगर जन–जन तक पहुंचाया न जाए तो समाज में जल के प्रति वह चेतना नहीं जगाई जा सकती है जिसकी आव यकता है। डॉ. मीनू खरे एक जानी–मानी रेडियो ब्रॉडकास्टर, लेखिका, लोक कलाकार और पर्यावरण संचार विशेषज्ञ हैं, जिन्हें रेडियो पत्रकारिता में 33 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

इंडियन ब्रॉडकास्टिंग सर्विस की पूर्व अधिकारी के तौर पर, उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, लखनऊ में निदेशक के रूप में काम किया, जहाँ उन्होंने व्यवहार में बदलाव लाने, खासकर जल संरक्षण के लिए नए तरह के संचार अभियान शुरू किए। वह वर्तमान में पाइथियन काउंसिल (भारत) में निदेशक (कला और संस्कृति) और ब्लू ड्रॉप फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष हैं।

मीनू खरे ने जल संरक्षण, संवर्धन की पूरी महफिल सजाई जब बूंदों की न टूटे लड़ी, कार्यक्रम की महत्वपूर्ण पहल शुरू की हैं, 20 से ज्यादा रेडियो श्रोता जल क्लब स्थापित किए हैं, और वर्तमान में दैनिक डिजिटल पॉडकास्ट पानी की कहानी के जरिए ऐसे लोगों को मंच उपलब्ध करवा रही है जो खेत, खलिहान, नदी, तालाब, कुंओं, बावडियों के संरक्षण में जुटे हैं।



भारत के पहले 24 घंटे चलने वाले वेब रेडियो रेडियो ब्लू ड्रॉप को चलाने वाली मीनू खरे पूरी तरह से जल संरक्षण को समर्पित हैं। जल संरक्षण पर दो प्रशंसित पुस्तकों, बूंदों की न टूटे लड़ी, और सेविंग गोमती अ क्लासरूम बियॉन्ड वॉल्स की रचना भी की है। रेडियो प्रसारण में उत्कृष्टता के लिए उन्हें भारत के प्रधानमंत्री से पहचान मिली है और बेगम अख्तर पर बनी उनकी प्रशंसित रेडियो डॉक्यूमेंट्री के लिए उन्हें सदी के महानायक अमिताभ बच्चन से सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्हें पर्यावरण संचार और जल संरक्षण के क्षेत्र में उनके बेहतरीन काम के लिए ग्लोबल अवार्ड (यूनिसेफ, न्यूयॉर्क), एशिया–पैसिफिक ब्रॉडकास्टिंग अवार्ड (मलेशिया), इंटरनेशनल रेडियो फेस्टिवल अवार्ड (ईरान), बेस्ट साइंस रिपोर्टिंग अवार्ड (भारत सरकार), उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, लासा कौल नेशनल यूनिटी अवार्ड, जल वीर सम्मान, गंगा सम्मान सहित कई सम्मान उन्हें प्रदान किए जा चुके हैं।


पानी की कहानी
विशेष ऑनलाइन पॉडकास्ट शो
बायोएंजाइम्स द्वारा
गोदावरी नदी की सफ़ाई
BIO-ENZYMES
प्रकृति से समाधान
नदी की सफ़ाई
हमारा अभियान
स्वच्छ गोदावरी
स्वस्थ भविष्य
विशेष अतिथि
दीपक मोरताले
संस्थापक
गोदावरी नदी संसद
नांदेड़
महाराष्ट्र
दिनांक: 28 जुलाई
समय: शाम 7:00 बजे
LIVE
फ़ेसबुक लाईव
प्रेजेंटर –
RJ जिज्ञासा सती
Blue Drop Foundation
जल संरक्षण • जल चेतना • जल संवाद • जल सेवा

डॉ पवन कुमार

लोक दायित्व, हरखपुरा, आजमगढ, उत्तर प्रदेश



जब नदी फिर बहने लगी.....

नदियां किसी भूगोल की स्मृति, समाज की संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों की उम्मीद होती हैं। जब नदी सूखने लगे तो उसके साथ केवल जलधारा नहीं रुकती, जीवन की एक पूरी धारा ठहरने लगती है। सरयू के मूल स्वरूप लौटाने की यही जिद जारी है।

आजमगढ़ की मूल सरयू भी कभी ऐसी ही स्थिति से गुजर रही थी। अप्रैल आते–आते नदी का सूख जाना लगभग सामान्य मान लिया गया था। फिर कुछ लोगों ने तय किया कि नदी के सूखने को नियति मानकर नहीं बैठा जाएगा। सवाल उठाया गया, नदी को समझा गया, उसके किनारों तक पहुंचा गया और लोगों को उसके साथ जोड़ा गया।

29 दिसंबर 2018 को शुरू हुआ 'मूल छोटी सरयू नदी बचाओ अभियान' यही एक संकल्प की शुरुआत था। इस पहल के केंद्र में थे डॉ. पवन कुमार, शिक्षा एवं सामाजिक कार्य से जुड़े और 'लोक दायित्व' के केन्द्रीय संयोजक। नदी के अध्ययन से लेकर तटों की सफाई, प्रदूषण और अतिक्रमण के कारणों की पहचान से लेकर जनजागरण तक, इस प्रयास ने धीरे–धीरे एक व्यापक रूप लिया। अभियान से जुड़े लोगों के अनुसार, वर्ष 2019 में लगभग 14 वर्ष बाद मूल सरयू का गर्भ फिर भरा और उसके बाद नदी के लगातार सूखे रहने की स्थिति में बदलाव आया।

एक सूखी नदी के फिर बहने की यह कहानी केवल पानी लौटने की कहानी नहीं है। यह उस विश्वास की कहानी है कि जब समाज किसी जलधारा को अपना मान लेता है, तो जल–संरक्षण 'काम' से आगे बढ़कर 'जन–अभियान' बन सकता है।

इसी विचार से आगे निकलीं 'पानी की पाठशाला', 'मेरा पौधा, मेरा भाई' और 'रघुभूमि से तपोभूमि यात्रा' जैसी पहलें, जिनमें पानी, पेड़, पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत को अलग–अलग विषय नहीं, बल्कि एक ही जीवन–धारा के हिस्से के रूप में देखा गया।

पवन के लिए जल–संरक्षण किसी सरकारी कार्यक्रम की तरह शुरू होकर रिपोर्ट में समाप्त हो जाने वाला काम नहीं, बल्कि समाज के व्यवहार में उतरने वाला अभियान है।

पौधे, हरियाली रहेगी तो पानी रहेगा इसी मूल मंत्र पर 2023 में रामायण में उल्लिखित 22 प्रजातियों के 55555 पौधे 25 हजार लोगों द्वारा मूल सरयू के त टपर लगाए गए जिससे एक नया कीर्तिमान स्थापित हुआ। यह क्रम जारी है और 2025 में 5000 व 2026 में भी इस अभियान में स्कूलों के सहयोग से 3 हजार से ज्यादा पौधों को लगाने जाने के साथ ही जारी है।























गेमर सिंह

तरूण भारत संघ, मोती किलो की ढाणी,
कठोडी, जैसलमेर, राजस्थान

तनेराव सिंह

तरूण भारत संघ, मोती किलो की ढाणी,
कठोडी, जैसलमेर, राजस्थान

भारत–पाक सीमा पर जैसलमेर में बनाए तालाब, रेत में खिली बूंदें, ग्रामवासियों को मिला जीवन

जन भागीदारी से जैसलमेर में जल संरक्षण की मिसाल, जनभागीदारी से 10 तालाबों का निर्माण बना एक मिसाल

भारत–पाकिस्तान सीमा के निकट राजस्थान के पश्चिमी जिले जैसलमेर में रहने वाला मैं एक किसान हूँ। साल के अधिकां ा दिनों में गर्मी होती है और गर्मियों में 46 डिग्री से ज्यादा रहता है। हमारा क्षेत्र देश के सबसे कम वर्षा वाले इलाकों में से एक है। यहाँ पानी की कमी जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियों में शामिल है। हम ग्रामीणों का जीवन मुख्य रूप से तालाबों में संचित वर्षा जल पर निर्भर है। खेती, पशुपालन तथा दैनिक आवश्यकताओं के लिए पानी जुटाना हमारे लिए हमेशा एक कठिन चुनौती रहा है।

हमारे क्षेत्र में लोगों की आजीविका खेती और भेड़–बकरी पालन पर आधारित है। इसके अलावा गायों, ऊँटों और अन्य पशुओं के लिए भी पानी की व्यवस्था करना आवश्यक है। यहाँ की मिट्टी में मुल्तानी मिट्टी की अधिकता होने के कारण यदि तालाबों या कुओं की खुदाई अधिक गहराई तक की जाती है, तो कई स्थानों पर खारा पानी निकलने लगता है। इस कारण हमारे लिए वर्षा जल का संचयन करने वाले पारंपरिक तालाब जीवन का प्रमुख आधार हैं।

इसी को समझते हुए मैंने तरुण भारत संघ के सहयोग से पिछले तीन वर्षों में जल संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। गाँव–गाँव जाकर ग्रामीणों को पानी का महत्व समझाया, उन्हें जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया और

सामुदायिक श्रमदान के लिए प्रेरित किया। इन प्रयासों से ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित हुई और सामूहिक सहयोग से लगभग 10 तालाबों का निर्माण कराया गया।

इस पहल के अंतर्गत मोहनगढ़ तहसील के बोआ सहित खिनसर और खिंया, मोती किलो जैसे क्षेत्रों में तालाब निर्माण के कार्य किए गए हैं। इन जल संरचनाओं का उद्देश्य वर्षा जल को संचित करना तथा ग्रामीण समुदायों और पशुधन के लिए पानी की उपलब्धता को बेहतर बनाना है। इन प्रयासों से लगभग 20 से 25 हजार की आबादी के साथ–साथ गायों, भेड़–बकरियों और ऊँटों जैसे पशुओं की जल आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिलने की उम्मीद है।

मेरा मानना है कि हमारे जैसे रेगिस्तानी क्षेत्रों में जल संरक्षण केवल एक सामाजिक कार्य नहीं, बल्कि जीवन बचाने का अभियान है। यदि प्रत्येक गाँव के लोग एकजुट होकर श्रमदान करें और वर्षा जल की हर बूंद को सहेजने का संकल्प लें, तो पानी की कमी से जूझ रहे समुदायों को बड़ी राहत मिल सकती है।

''मेरा संकल्प है कि गाँव–गाँव में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़े, अधिक से अधिक तालाबों का निर्माण एवं पुनर्जीवन हो और आने वाली पीढ़ियों तथा हमारे पशुधन के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।''

करोडी लाल मीणा, करौली, राजस्थान

करोडी है करौली का यह जल प्रहरी, करोडी लाल मीणा

राजस्थान के करौली में कुछ मह ाहूर है तो वह माता करौली वाली और पानी की किल्लत। करोड़ी लाल मीणा करौली की सपोटरा तहसील गांव चो रियारिया में जब पानी बनाने में जुटे तो कई जल संरचनाएं खडी हो गईं।

शिक्षा कर्मी योजना में कार्यरत करोडी लाल वास्तव में करोडी थे और उन्होंने जब से सपोटरा की डांग में काम शुरू किया वह आज तक जारी है।

आज तक वह व्यक्ति लोगों को जागृत करने का काम और जल संरचनाओं का निर्माण करवाने का काम अपने गांव और आसपास के गांव में करवा रहा है। कम बोलना, लेकिन ज्यादा करना उनका मूल मंत्र है। ऐसे कर्मठ जल प्रहरी तपती धूप में आज भी किसी तालाब को तैयार करते देखे जा सकते है।






कनोई पार सरोवर
पवित्र-सरोवर पुनरुद्धार प्रकल्प
दिव्य-जल क्षमता: 10 करोड़ लीटर
वित्त पोषक: United Water, Netherlands
क्रियान्वयन तरुण भारत संघ







SH. MCT PAREVA

Techno-legal professional, Former ADG CPWD
New Delhi -110089



Dcentralized, low-cost engineering models across rural & urban India to build a permanently water-secure nation.

Urban water security cannot be achieved through centralized systems alone; it requires decentralized, data-driven engineering rooted in community ownership.

Flood hazard turned into a secure irrigation asset.

Hydrological Surveys & Regional Flood Mitigation (1978–1981) In September 1978, in the Rajasthan Irrigation Department, I executed topographical and hydrological survey of the River Sabi, tracing its network from Sikar through Jaipur, Alwar, and Haryana into Yamuna in Delhi. By computing contours, cross-sections, and metrics, I established the empirical foundation for minor irrigation networks and check dams. This permanently mitigated the catastrophic flash floods that devastated these regions in 1977 and 1978, turning a massive flood hazard into a secure irrigation asset.

As In-charge of Barmer Irrigation Sub-Division, hydrological mapping of the hyper-arid River Luni basin was done to optimize water utilization. Furthermore, in the Hydrology Division, over 100 years of raw historical rainfall data were digitised to calculate unit hydrographs, synthetic hydrographs, and peak flood curves. This established the foundational mathematical design criteria utilized by state planning authorities for future flood defense works and reservoirs.

Master Drainage Planning & Flood Management in Delhi: During my tenures as the Chief Engineer and Head of Department (HOD) of the Irrigation & Flood Control (I&FC) Department, GNCTD (2006–2009 and 2013–2014), I systematically modernized the capital's vulnerable macro-drainage infrastructure. Recognizing that decades-old records were becoming obsolete, I completed digitalization of Delhi's historic 1976 Master Drainage Plan. This preserved vital baseline flow dynamics necessary to counter modern urban waterlogging. To adapt the capital's networks to rapid horizontal growth, I officially formulated the comprehensive Terms of Reference and called the Expression of Interest to draft the modern Master Plan of Drainage for the NCT of Delhi aligned with MPD-2021. During the September 2008 floods, I successfully coordinated defenses against a 4.095 Lakh Cusec discharge in Yamuna. Later, as Project M.[anager (2009–11), I established PWD's first Central Flood Control Room and authored the Monsoon Control Order, structurally engineering solutions that reduced PWD`s chronic waterlogging points from 40 to just 3.

Macro Drain Revamping & Water Conservation Works

72-Embakement-km Anti-Pollution Drain Wall & Netting Infrastructure: To aggressively curb rampant garbage dumping and protect the fragile ecosystem of the River Yamuna, I designed and executed a □ 32.0 Crore comprehensive revamping scheme covering 72 embankment-Km of major arterial stormwater channels, including Najafgarh Drain, Supplementary Drain, Trunk Drain-I, Escape Drain etc. using theft-free, unreinforced fly ash bricks above ground. To further shield the river from solid waste, I designed and installed mesh netting across 72 bridges on drains. Four specialized, high-capacity amphibious dredgers and barges were procured to clear deep silt accumulation. Long-standing challenges to award and complete the Supplementary Drain project, which had been running since 1989, was resolved and successfully opened this vital water channel to its full design capacity.

Deep Aquifer Recharge Wells & Water Body Rejuvenation: Facing an acute drop in Delhi's sub-surface water table caused by heavy concrete urbanization, I drafted official 9-Point Guideline Framework for the Rejuvenation of 650 Water Bodies, which was formally adopted across all state land-owning departments. Under this initiative, my office took charge of 488 rural and urban village ponds (Johads), successfully completing the physical deepening and ecological revival of 175 water bodies. To actively turn monsoon flood risks into functional sub-surface resources, deep artificial recharge wells, sand filtration pits, and gravel-filled trenches were completed across 37 rural villages within the Kanjhawala, Alipur, and Najafgarh blocks (including Punjab Khore, Jat Khore, Mungeshpur, Jharoda Kalan, and Dhansa). These deep shafts bypassed impermeable clay layers to inject clean, filtered rainwater straight into depleted deep aquifers. Impact: Through the cumulative implementation of these water revival frameworks and deep artificial recharge wells during that period,

the regional water table was successfully raised by approximately 2-3 metres across those blocks, directly benefiting peripheral agricultural farming and stabilizing localised water security.

Hilly Terrain Catchments & Eco-Restoration: To control high-velocity monsoon runoff originating from the rocky Aravalli terrains of South Delhi, 23 functional masonry check dams were constructed inside the Asola Bhatti Wildlife Sanctuary (Mehrauli Block). These check dams successfully arrested topsoil erosion, curbed downstream urban flooding, and created vital micro-percolation zones that stabilized the regional water table. Furthermore, I completed ecological restoration of the heavily degraded village pond at Bapu Park, Mangolpuri. The project revived the historical water body, established public stepped ghats, and installed at 4.93 Crore automated multi-colour fountain equipped with an advanced water-film screen. This project stands as the first high-capacity installation of its kind in Northern India, beautifully balancing critical urban stormwater retention with local community utility.

Anything you would like to convey or recommend.. As a senior water resource engineer, my life long recommendation is that urban water security cannot be achieved through centralized systems alone; it requires decentralized, data-driven engineering rooted in community ownership. My work has proven that by mapping historical river basins, transforming heavy drainage channels into protected ecological corridors, and embedding vertical recharge structures directly within restored village ponds, we can effectively mitigate flash floods while aggressively replenishing depleted sub-surface aquifers. Even after my retirement in 2015, I continue to actively advise across several technical and social institutions—including serving as Chairman of the Indian Institution of Technical Arbitrators (Delhi State Centre)—to champion techno-legal efficiency in national infrastructure projects.





POND OF VILLAGE DHANSA KH. NO. 138 (AREA- 674 SQ.M.)
Existing Storage Capacity : 400 cum
Additional Storage Capacity created : 1600 cum



POND OF VILLAGE BAJEETPUR KH.NO.30/9/112 (AREA – 20300 SQ.M.)
Existing Storage Capacity : NIL
Additional Storage Capacity created : 3300 cum







Wall in U/S of Ragharpubir Nagar Bridge at RD 42890M of N.G. Drain



Inspection by Shri Narayanswami as Advisor CWG, Raghubir Nagar Bridge at N.G. Drain





MILIND PANDIT

DIRECTOR, Rewakhand Foundation
Er. Milind Pandit and Dr Swati Samvatsar



DR SWATI SAMVATSAR

DIRECTOR, Rewakhand Foundation
Er. Milind Pandit and Dr Swati Samvatsar

For the past 40 years, I have been dedicated to water-centric rural development across diverse regions of India and Africa, working to strengthen water security, improve rural livelihoods, and promote sustainable resource management.

My core expertise lies in integrated watershed development, rainwater harvesting, water conservation, and the judicious and efficient use of water, with a particular emphasis on micro-irrigation systems to optimize water utilization and enhance agricultural productivity.

My working spectrum is full of variety of faculties' viz., watershed area development, rain water harvesting, rural sanitation, rural electrification organic and natural farming and use of cow dung as biogas and vermin compost, preparation of botanical

products, waste water management in rural areas through reed bed techniques, trainer for various

subjects like technical aspects of watershed area, traditional rain water harvesting structures, roof top rain water harvesting system, precision farming etc.

Beyond water management, my work encompasses several interconnected areas of sustainable rural development:

Water Conservation and Watershed Management: Developing and implementing traditional and scientific approaches to watershed development, rainwater harvesting, groundwater recharge, and efficient water-use practices.

Low-Cost and Sustainable Housing: Promoting affordable, eco-friendly construction techniques based on low-cement and steel-free building concepts to create cost-effective and sustainable rural housing.

Renewable Energy and Rural Electrification: Facilitating the installation of biogas plants and promoting decentralized energy solutions to improve access to clean energy and electricity in remote rural communities.

Rural WASH (Water, Sanitation and Hygiene): Supporting toilet construction and advancing community-led sanitation, hygiene awareness, and improved rural living conditions. Sustainable Agriculture and Natural Resource Management: Encouraging horticulture, agroforestry, natural farming, and other sustainable agricultural practices to improve soil health, conserve water, enhance biodiversity, and strengthen farmers' livelihoods.

Ravine stabilization is another key work done by me, of course as prototype in ravines of lower

Yamuna and here the initial brown land became green over a period of six years by developing rain

water harvesting structures followed by reintroduction of local flora and finally judicial use of water

and as result, over 400 bore-wells became functional throughout the year, acres of land under

different crops for three seasons, retrieval of avian fauna means many birds return to the locality,

different varieties of butterflies etc., I have become instrumental in Watershed area development of over 240000 ha in Gujarat, Madhya-

Pradesh and Rajasthan. Through this multidisciplinary approach, my mission has been to integrate water conservation with sustainable agriculture, clean energy, affordable housing, and community development. I remain committed to empowering rural communities through practical, locally appropriate, and replicable solutions that build climate resilience, promote self-reliance, and improve the quality of life for present and future generations.

Total 5200 numbers of Cement check dams small and medium size constructed, Earthen nalla bund

1200 numbers , 700 numbers of wire mesh Gabion Structures , SCT/ CCT 2400000 Meters, more than

900 dug wells individual and community, 4200 biogas plants, 57 villages of MP electrified with HT/ LT connections,









राजीव शर्मा

आईएएस, पूर्व आयुक्त भाहडोल, मध्य प्रदेश
जल क्रांति अभियान



जल संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में एक जल क्रांति

जल क्रांति अभियान से अब तक लगभग 5000 कुओं का सफलतापूर्वक रिचार्ज किया जा चुका है और मध्य प्रदेश के कई जिलों में जारी है यह अभियान

जल संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति मेरा समर्पण विद्यार्थी जीवन से ही प्रारंभ हुआ। प्रशासनिक सेवा में आने के बाद इस संकल्प को व्यापक जनभागीदारी और ठोस कार्यों के माध्यम से आगे बढ़ाने का अवसर मिला।

अनुविभागीय अधिकारी के रूप में दमोह, पन्ना, छिंदवाडा, उज्जैन, शाजापुर एवं मंदसौर जिलों में परंपरागत जल स्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए व्यापक अभियान चलाए। इसके अंतर्गत कुओं, बावड़ियों, जलधाराओं, झरनों एवं तालाबों की सफाई, गहरीकरण, मरम्मत और पुर्नस्थापना के कार्य किए गए। नरसिंहपुर, मंडला, बालाघाट एवं उमरिया जिलों में विलुप्तप्राय एवं मृतप्राय नदियों को पुनर्जीवित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी के रूप में हजारों नए तालाबों, मिट्टी के बंधानों एवं कुओं का निर्माण कर वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण तथा ग्रामीण जल सुरक्षा को नई मजबूती प्रदान की।

वर्ष 2023 में शहडोल संभाग के आयुक्त के रूप में जल क्रांति अभियान की शुरुआत की, जिसकी सराहना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात में की।'' यह उपलब्धि जल संरक्षण के क्षेत्र में सामूहिक प्रयासों और जनभागीदारी की महत्वपूर्ण पहचान बनी।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर अपना जीवन पूर्णतः जल संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया। वर्तमान में मध्यप्रदेश में ''जल क्रांति अभियान'' के माध्यम से भिंड, शाजापुर, उमरिया एवं मंडला सहित विभिन्न जिलों के किसानों को वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण की सरल, सस्ती एवं प्रभावी तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

इस अभियान के अंतर्गत अब तक लगभग 5000 कुओं का सफलतापूर्वक रिचार्ज किया जा चुका है।'' मेरे मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं पर्यवेक्षण में निर्मित असंख्य जल संरचनाएँ आज लाखों ग्रामीणों के लिए सिंचाई, पेयजल एवं दैनिक जल आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

मेरा उद्देश्य केवल जल संरचनाओं का निर्माण करना नहीं, बल्कि समाज में जल संरक्षण की स्थायी संस्कृति विकसित करना है, ताकि प्रत्येक किसान, प्रत्येक गाँव और प्रत्येक नागरिक जल के मामले में आत्मनिर्भर बन सके।









भोपाल 24-07-2023

दैनिक भास्कर

आज नो निगेटिव अखबार

गौहद के किसानों को IAS शर्मा ने सिखाए कुएं-ट्यूबवेल रिचार्ज के गुर

भोपाल। शहडोल संभाग के आयुक्त आईएएस राजीव शर्मा द्वारा शुरु की गई जलक्रांति नर्मदा घाटी से चंबल पहुंच गई है। सरकारी खजाने से बिना एक रुपए खर्च किए शर्मा के फार्मूले से धरती का खजाना जल से भरने के काम में शर्मा जुटे हुए है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी मन की बात में शर्मा के जलक्रांति और फुटबाल को लेकर किए गए कामों का जिक्र कर चुके है। शनिवार से शर्मा ने अपने गृह जिले भिंड के गोहद में किसान सम्मेलन में जलक्रांति का शुभारंभ किया। उन्होंने यहां के किसानों को कुए और ट्यूबवेल रिजार्च करने के गुर सिखाए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात से सुर्खियों में आए शहडोल कमिश्नर राजीव शर्मा के खेल और जलसंरक्षण के क्षेत्र में किए गए नए अविष्कारों ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया है। बिना किसी सरकारी मदद के वे मृतप्राय हो चुके कुए और हैंडपंपों को पुर्नजीवन देने की कवायद में जुटे है। जलक्रांति के माध्यम से वे सबसे कीमती पदार्थ जल से धरती का खजाना भरने का काम कर रहे है।

दैनिक भास्कर

दमोह 02-07-2024

कुएं व पुराने जलस्रोतों को जीवनदान देने की आवश्यकता है: राजीव शर्मा

भास्कर संवाददाता | दमोह



दमोह। पीजी कॉलेज में आयोजित जल संगोष्ठी में उपस्थित अतिथि व सदस्य।

राजकीय ज्ञानचंद्र श्रीवास्तव स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह में प्रयास पर्यावरण संस्था के तत्वावधान में जल संरक्षण संगोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता के रूप में वरिष्ठ आईएएस अधिकारी लेखक व साहित्यकार राजीव शर्मा, नंदलाल सिंह, नारायण सिंह ठाकुर सहित अन्य अतिथि मौजूद थे।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में मंचासीन अतिथियों ने मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन किया। मुख्य वक्ता राजीव शर्मा ने बुंदेलखंड की विशेषता, बुंदेली भाषा, बुंदेली संस्कृति और बुंदेली व्यंजनों की विशेषता बताई और उन्हें अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने भारतीय समाज पर अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रभाव पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने सांस्कृतिक एवं भौगोलिक प्रलय को रोकने के लिए अद्भुत सूत्र दिए। वर्तमान युग में जल के गहराते हुए संकट पर प्रकाश डालते जलस्रोतों को जीवनदान देने की आवश्यकता है। इसे उन्होंने जल क्रांति अभियान की संज्ञा दी। उन्होंने मोबाइल के अनावश्यक प्रयोग को व्यक्ति एवं समाज के लिए घातक बताया। उन्होंने कहा कि फुटबाल जैसे खर्च विहीन खेलों के प्रति बच्चों में जागृति पैदा करने की नितांत आवश्यकता है। वृक्षों का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि नए पौधे लगाने के बजाए सैकड़ों वर्ष पुराने वृक्षों को कटने से रोका जाना चाहिए।

वृक्ष ही जल संकट, ग्लोबल वार्मिंग, आक्सीजन की घट रही मात्रा को संतुलित कर सकते हैं। सरफ, डॉ. अनिल चौधरी मनोहर काजल, महेंद्र दुबे, सुसंस्कृति परिहार, रमेश व्यास, एमएल जैन, डॉ. सौरभ नेमा, चार्य के अलावा शाखा अध्यक्ष प्रदीप अग्रवाल, सचिव पींके जैन, कोषाध्यक्ष संतोष जैन, एलपी चौरसिया, महेंद्र जैन, एम.एल. जैन, रामशंकर दुबे, रामसेवक सोनी, प्रशांत खरे सहित अन्य लोग मौजूद थे। संचालन प्रयास संस्था सहसंगठक डॉ. आलोक सोनक्लकर ने किया। प्रतिवेदन वाचन हेतु संगठक डॉ. एल.सी. जैन को आमंत्रित किया। इस दौरान प्रमोद बहुकुल, मोहन राय, सीके जैन, ऋषि उपाध्याय का





कमिश्नर ने जल क्रांति अभियान की उमरिया में की समीक्षा

श्रृष्टि को बचाने का अभियान है जलक्रांति, जल संरचनाओं को मिलकर बचाना होगा



अभियान में उमरिया जिले को करेंगे अव्वल : कलेक्टर

राम भरोस मीणा

ग्राम – भोपाला, पोस्ट – गढबसई, तह – थानागाजी,
जिला – अलवर, राजस्थान – 301022



एल पी एस विकास संस्थान, भोपाला

पानी पेड़ के बारे में बचपन से अपने माता–पिता, दादा – दादी जी से संवाद के साथ कहानियां सुनने को मिलती रही, लाव चडस द्वारा कुओं से पानी निकाल कर खेती करते समय एक एक बूंद पानी का ध्यान रखना, पानी को आवश्यकता से अधिक खेत में ना बहनें देना, बार–बार पानी को संजोकर खेत के प्रत्येक कूढ तक पहुंचाना, एक कठीन परिश्रम के साथ करना, पानी की महिमा को बताता है। खेत की डोल पर पेड़ लगाना, डोल को वर्षा से पहले पुनः मजबूत बनाना, आंखों देखा और हाथों किया काम, मुझे पानी पेड़ को संजोकर रखने के लिए प्रेरित किया। 1997 में एम ए भुगोल से पासआउट होने के बाद जब गांव में डिजल इंजन से पानी निकाल ते देखा तब पाया की पानी धीरे–धीरे निचे की और जा रहा है, कुआं खुदाइ में मशीनों का उपयोग होने लग गया, वहीं उत्पादन के साथ लागत बढ़ने लगी, 1999 में पिता जी द्वारा कुआं खोदते समय उनके ऊपर पत्थर गिर गया, पिता जी की स्थिति नाजुक बनी, अकाल की स्थिति पहले से बनी हुई थी, उन परिस्थितियों में दादाजी द्वारा तैयार पीपल के पेड़ों के पत्ते खिला कर पशुओं को बचाया, माता जी ने और पेड़ लगाने की सलाह दी। पीपल,बरगद,नीम गूलर कों अकाल दुकाल में काम आने वाला बताया। इसी समय पानी पेड़ के महत्व को नजदीकी से समझा और 2000 – 2001 से इन्हें संजोने का संकल्प लेकर काम प्रारम्भ किया। युवाओं, महिलाओं, बच्चों के साथ संगोष्ठी या, सभाएं, चोपालों पर वार्तालाप के साथ नेहरु नवयुवक मंडल, स्थानीय संगठनों के साथ मिलकर जोहडो की सफाई, बावड़ियों की सफाई, वृक्षारोपण, प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन जैसे कार्यक्रम आयोजित किया। 2006 – 07 में श्रेष्ठ युथ मण्डल सम्मान प्राप्त हुआ। लोगों का जुड़ाव हुआ, आर्थिक सहयोग प्राप्त होने लगा, दर्जन भर जोहडो का निर्माण कराने के साथ सभी विद्यालयों में 2010 तक 15000 पेड़ लगाने में सफल हुए। 2011 से रूपारेल नदी, ढिगारिया वाली नदी, गोचछया वाले नाले को बचाने की लड़ाई लड़ते रहे। अब हम पर्यावरण संरक्षण को भी साथ लेकर चलने लगे। पानी पेड़ पर्यावरण संरक्षण को साथ लेकर चलते हुए सैकड़ों लेख लिखे, 125500 पेड़ लगाए, 10 हैक्टेयर नग्न भूमि को जंगल में बदला, कुलाना वाले हनुमान जी का पहाड़, पर्यावरण शिक्षा केंद्र निकट सालेटा, भैरव घाटी निकट हींसला जैसे स्थानों को वृक्षारोपण के साथ पानी संग्रह योग्य बनाया। पक्षियों वन्य जीवो, पशुओं के लिए चरागाह भूमि बनी। पंचायत समिति – थानागाजी, पंचायत समिति – नारायणपुर, पंचायत समिति – विराटनगर में 102000 युवाओं को जागरूक किया, 5150 किसानों को जल संरक्षण, बागाती खैती के प्रति जागरूक किया। रुपारेल नदी बचाओ अभियान, पर्यावरण बचाओ अभियान, जीवन जतन यात्रा, वृक्षारोपण महा यज्ञ अभियान जैसे अनेकों अभियानों का संचालन करने के साथ वर्ष 2025–2026 में जल संजोने, पेड़ों के महत्व, पर्यावरणीय प्रभावों को लेकर 50000 से अधिक युवाओं को जागरूक कर लाभान्वित किया। परिणाम स्वरूप आज नग्न पहाड़ वनों में तब्दील होने लगें हैं, प्रत्येक युवा पानी संग्रह करने लगा है, किसान बूंद बूंद सिंचाई को अपनाने लगे हैं, आम व्यक्ति पेड़ों को बचाने में जुटे हैं। प्रत्येक कार्य धरातल पर लोगों को प्रेरणा देता है। यहीं सबसे बड़ी सफलता है।

आप जो भी सुझाव देना चाहें...

पानी पेड़ पर्यावरण संरक्षण आज की पहली प्राथमिकता है, प्रत्येक व्यक्ति अथवा प्राणी को स्वच्छ वातावरण, स्वच्छ पानी नहीं मिल पा रहा। सामाजिक सरोकार के इन कार्यों को करने के लिए हर किसी की हिम्मत नहीं होती। यदि जों व्यक्ति, संस्थान, समुदाय इस प्रकार के कार्य कर रहे हैं और उन्हें समय समय पर सम्मान, आदर दिया जाता रहें तब उनका उत्साह वर्धन होता है और एक जोश के साथ पुनः प्रयास करता है। अतः यह सम्मान हमारे जैसे युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्राप्त होना गर्व की बात है। यदि हमारा चयन किया जाता है तो हमें भी गर्व महसूस होगा।


लिया संकल्प

10 वर्षों की मेहनत से खड़ा किया हजारों पेड़ों का जंगल

कुलाना का वीरान पहाड़ फिर हुआ हरा-भरा, पांच पौधों से शुरू किया अभियान

प्रकृति संरक्षण के कार्यों की सराहना

धोक के जंगलों से कभी आरक्षित था पहाड़


नदी

नदियों के संरक्षण को लेकर नदी पाठशाला आयोजित









वृक्षारोपण महायज्ञ में हर नागरिक दे आहुति : मीणा

कोटपूतली (सीमा सन्देश संवाददाता)। बिगड़ते पर्यावरणीय हालात, बढ़ते तापमान, घटते वन क्षेत्र और मौसम चक्र में हो रहे बदलाव को देखते हुए प्रत्येक नागरिक को वृक्षारोपण महायज्ञ से जुड़कर पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। यह बात एलपीएस विकास संस्थान द्वारा आयोजित वृक्षारोपण अभियान के दौरान प्रकृति प्रेमी राम चरित्र मीणा ने कही। उन्होंने कहा कि आज किसान, सूखा, बरसते तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के लोग जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं। नदियों का जलस्तर लगातार घट रहा है और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। ऐसे में अधिक से अधिक पौधे लगाकर आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण और शुद्ध वायु उपलब्ध कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। संस्थान के अध्यक्ष एवं राजकीय महाविद्यालय धानागाजी के प्रोफेसर राम प्रताप मीणा ने कहा कि वर्तमान समय में



पर्यावरण संरक्षण सबसे बड़ा यज्ञ है। उन्होंने कहा कि धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ प्रकृति की रक्षा के लिए भी वृक्षारोपण को जनआंदोलन बनाया जाना चाहिए। अधिक से अधिक पेड़ लगाने से वातावरण में नमी बढ़ेगी, तापमान में कमी आएगी और वर्षा के साथ शुद्ध जल संसाधनों का संरक्षण संभव होगा।

उन्होंने बताया कि एलपीएस विकास संस्थान ने चाटा जाका चौकी के समीप 51 पौधे लगाकर वृक्षारोपण महायज्ञ का शुभारंभ किया है। संस्थान ने इस वर्ष 1,000 पौधे लगाने तथा एक लाख बीजों की सीड बॉल (बीज बोने) अभियान चलाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे जनसहयोग से पूरा किया जाएगा।

छात्राओं का इंटर्नशिप प्रशिक्षण प्रारंभ, शुरू, जल संरक्षण पर दिया जोर



धानागाजी. इंटर्नशिप प्रशिक्षण के दौरान मौजूद छात्राएं।

धानागाजी | राजकीय कन्या महाविद्यालय, प्रतापगढ़ की 119 छात्राओं के लिए इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत एलपीएस विकास संस्थान में सामाजिक स्रोतकारों को लेकर 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रकृति प्रेमी रामभरोस मीणा ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अधिक से अधिक जल संरक्षण करना आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ जल उपलब्ध हो सके। चैंज मेकर पायल जांगिड़ ने छात्राओं से आह्वान किया कि वे जल संरक्षण जैसे पुण्य कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाएं और संस्थान के उद्देश्य को सफल बनाने में योगदान दें। असिस्टेंट प्रोफेसर रामप्रताप मीणा ने बताया कि यह प्रशिक्षण तीन सप्ताह तक चलेगा, जिसमें जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और जैविक खेती से संबंधित विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।



संदीप चौधरी

सुपुत्र श्री कंवरपाल सिंह
थरौली, बलियाखेड़ी, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश



जल संरक्षण से ग्रामीण विकास की नई पहचान

जनभागीदारी से जैसलमेर में जल संरक्षण की मिसाल, जनभागीदारी से 10 तालाबों का निर्माण बना एक मिसाल

जल संरक्षण और ग्रामीण विकास की दिशा में उल्लेखनीय पहल की। इन प्रयासों से ग्राम पंचायत के '12 उपेक्षित एवं गंदे तालाबों का पुनर्जीवन' कर उन्हें स्वच्छ एवं सुंदर जलाशयों में विकसित किया गया।

इन तालाबों के माध्यम से वर्षा जल संरक्षण और 'भूजल पुनर्भरण' को बढ़ावा मिल रहा है। इसी पहल को आगे बढ़ाते हुए एक विशेष तालाब को लेक थरौली के रूप में विकसित किया गया है, जहां अब नौकायन और जल–क्रीड़ा गतिविधियां शुरू हो चुकी हैं।

यह प्रयास थरौली में 'ग्रामीण पर्यटन' को बढ़ावा देने के साथ–साथ बच्चों और युवाओं को खेलों से जोड़ने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है। संदीप चौधरी का उद्देश्य है कि गांव के बच्चों को बेहतर प्रशिक्षण और अवसर मिलें, ताकि वे भविष्य में 'जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर थरौली और देश का नाम रोशन करें।'

आज इन लहरों पर नाव चल रही है, कल इन्हीं लहरों से थरौली के बच्चे पदक जीतकर निकलेंगे। यह पहल 'जल संरक्षण, ग्रामीण पर्यटन और खेल विकास' को एक साथ जोड़कर गांव के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखने का प्रयास है।

सुझाव–बच्चों को स्कूल स्तर पर रोचक तरीके से प्र ाक्षित किया जाए इससे भविश्य में वे जल, पर्यावरण को समझ कर जलवायु की रक्षा करने के प्रति समर्पित रहें।

















संजय कुमार

(गौरैयाविद सह पर्यावरण संरक्षक)



एक प्याला पानी से शुरू हुई मुहिम जल–जीवन–हरियाली संरक्षण अभियान

पानी बचाने के साथ गौरेया, पक्षियों को बचाने का संदेश भी इस मुहिम का हिस्सा बना, पौधारोपण, जल स्रोत बचाने की अपील जारी है

जल–जीवन–हरियाली यानी पर्यावरण संरक्षण से मेरा जुड़ाव 2007 में पटना, बिहार में उस वक्त हुआ जब जून माह की दोपहर में किचन से– चीं..चीं आवाज आई, देखा तो एक नन्ही गौरैया। चोंच खुली, प्यास से बेहाल, हांफ रही थी। तुरंत नल खोला पानी पी और उड़ गई। उस 10 सेकंड ने मेरी जिंदगी बदल दी। सवाल दिमाग में गूंजा–इंसान तो मांग कर पानी पी लेता है, पर ये बेजुबान कैसे मांगे? नन्ही गौरैया के लिए पानी–दाना अपने बालकोनी–छत पर रखना शुरू किया। इस पहल से मेरे बालकनी में गौरैया, बुलबुल, फाख्ता, तोता, रोबिन, कौआ, बबूना सहित कई चिड़ियों का आना–जाना लगता रहा।

पानी ने सबको खींचा। चिड़ियों में सेंस होता है पानी कहाँ है वे खोज लेती हैं। इसबीच, गौरैया की विलुप्ति की बातों से रूबरू हुआ। गौरैया संरक्षण को और तेज किया। लोगों से दाना–पानी रखने और घोंसला–पेड़ लगाने की अपील के साथ अभियान चलाया। लोगों के बीच पानी का बर्तन, घोंसला का निशुल्क वितरण किया।

पानी पीती गौरैया की तस्वीरें खींचना और सोशल मीडिया पर पोस्ट करने लगा तो इस पहल से लोग जुड़ते गए। आज मेरे पास गौरैया 20 हजार से ज्यादा तस्वीर है। जागरूकता के लिए फोटो प्रदर्शनी का आयोजन बिहार के पटना, वैशाली, भागलपुर, अररिया, सारण सहित विभिन्न जिलों किया। रोजाना फोटो खींच कर सोशल मीडिया ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लोगों से अपने–अपने घरों में दाना–पानी रखने की अपील करता हूँ। फायदा भी हुआ। हजारों लोगों का फीडबैक मिला। लोगों ने बताया कि उन्होंने पहल की और पहल से उनके यहां गौरैया के साथ –साथ दूसरी चिड़िया भी दाना–पानी के लिए आने लगी। गौरैया के संरक्षण के साथ ही साथ जल संरक्षण, पेड़ लगाने की अपील ने प्रभाव डाला, लोगों ने पहल की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा किया।

दिल्ली, केरल, अंडमान, लेह, जबलपुर, कान्हा जंगल, रांची आदि शहरों में जाने के क्रम में जहाँ गौरैया से रूबरू होता वहीं जल–जीवन–हरियाली से भी अपने को जोड़ने से रोक नहीं पाता। गौरैया–जल–पौधा संरक्षण के लिए मैंने सोशल मीडिया के साथ प्रिंट और इलेक्टोनिक मीडिया का सहारा लिया, आलेख लिखा लोगों को गोलबंद किया। कोरोना काल में वेबिननार का भी सहारा लिया। साथ ही गौरैया संरक्षण की पहल फेसबुक पर 'हमारी गौरैया' नाम से पेज और "सेव स्पैरो" ऐप भी बना कर लोगों को जोड़ने का प्रयास जारी है। इधर वेब पोर्टल आई लव स्पैरो शुरू किया। गौरैया संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करना, गौरैया की खीची तस्वीरों की फोटो प्रदर्शनी लगाना अभियान का हिस्सा है, जो आज भी जारी है। गौरैया संरक्षण के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण पहल शुरू हुई। 'हमारी गौरैया और एनवायरनमेंट वैरियर्स' टीम बनी और जल–जीवन–हरियाली को बचाने की मुहीम तेज हुई। पौधारोपण अभियान चलाया।

अब तक 20 हजार से अधिक पौधे लगाए अथवा वितरित किये। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किये गए अभियान एक पेड़ मां के नाम के तहत पौधारोपण से भी जुड़े। पर्यावरण संरक्षण में जागरूकता अहम् रहा। दाना–पानी रखने और घोंसला–पेड़ लगाने के साथ साथ जल संरक्षण को लेकर जागरूकता अभियान चलाया। सरकारी सेवा में रहते जो वक्त मिलता उसका इस्तेमाल करता। मीडिया और लेखन का सहारा लिया।

गौरैया और पर्यावरण संरक्षण पर पांच पुस्तकें दृ अभी मैं जिन्दा हूँ गौरैया, ओ री गौरैया, आओ गौरैया, आई लव स्पैरो और जल जीवन हरियाली प्रकाशित हुई। पुस्तक जल जीवन हरियाली में जल संरक्षण पर अध्याय रखा। लगातार विभिन्न समाचार पत्रों में जल–जीवन–हरियाली संरक्षण पर लिखता रहा हूँ ताकि जनता तक बात पहुंचे और लोग पहल करें। जागरूकता के लिए डिजिटल मीडिया का सहारा लिया। जल, जीवन और हरियाली के संरक्षण में सफलता भी मिली आज सिर्फ बिहार ही नहीं देश भर में गौरैया–पर्यावरण संरक्षण की गूंज सुनाई पड़ी। एक प्याला पानी सिर्फ गौरैया के लिए रखने का सन्देश पक्षियों तक ही नहीं रहा बल्कि एक कार को साफ करने में 100 लीटर पानी बर्बाद करने वालों को देता रहा हूँ कि पानी बचायेंगे तो आप पूरी धरती को बचा सकते हैं।











THE SUNDAY STANDARD

I APPROVE FIVE-DONE MY BIT NOW IT'S UP TO YOUNGER PEOPLE

BRIGHTSIDE

BIHAR

Alarmed by the dwindling population of house sparrows, this IAS officer in Patna has launched his own 'conservation programme' which is drawing attention, writes Rajesh Kumar Thakur

CALL OF THE SPARROW

सावित्री श्रीवास्तव

डीआईपीएस, नीर रैन वाटर हारवेस्टिंग
ग्वालियर, मध्य प्रदेश



सूखे कुंए, बावड़ी जीवित करने चली तो समाज ने कहा, वाटर वीमेन

कुओं एवं बावड़ियों का पुनर्जीवन, एक ऐतिहासिक बावड़ी को गोद लेकर उसका संरक्षण तथा 12 राष्ट्रीय राजमार्गों पर वर्षा जल हार्वेस्टिंग के कार्य से बढ़ा वर्शा जल भंडार

एक सेवानिवृत्त मेजर की पुत्री होने के नाते बचपन से ही प्रकृति के प्रति प्रेम, अनुशासन और समाज सेवा की भावना जीवन का आधार रहे हैं। समय के साथ देखा कि एक ओर प्रकृति हमें प्रतिवर्ष अमूल्य वर्षा जल प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर जल संकट निरंतर बढ़ता जा रहा है। हमारे क्षेत्र का एक बोरवेल पूरी तरह सूख चुका था। गर्मियों में पानी की भारी कमी होती थी, जबकि वर्षा का बहुमूल्य जल व्यर्थ बह जाता था। इसी अनुभव ने मुझे जल संरक्षण को अपने जीवन का मिशन बनाने की प्रेरणा दी।

शुरुआत आसान नहीं थी। लोगों ने मेरे प्रयासों पर प्रश्न उठाए और कहा कि एक व्यक्ति कितना बदलाव ला सकता है। लेकिन मेरा विश्वास था कि हर बड़ा परिवर्तन एक छोटे संकल्प से ही जन्म लेता है। मैंने निरंतर कार्य किया और आज यह प्रयास एक व्यापक जनभागीदारी वाले अभियान का रूप ले चुका है। आज मेरे प्रयासों से प्रतिवर्ष लगभग 44 करोड़ 4 लाख 36 हजार 700 लीटर वर्षा जल का संचयन एवं भूजल पुनर्भरण हो रहा है और यह आँकड़ा लगातार बढ़ रहा है।

अब तक सूखे बोरवेलों का रिचार्ज, घरों की छतों पर वर्षा जल संचयन, खेतों, कॉलोनियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, अस्पतालों, होटलों, औद्योगिक क्षेत्रों तथा सड़कों पर बहने वाले वर्षा जल का संरक्षण सफलतापूर्वक किया गया है। इसके अतिरिक्त 18 कुओं एवं बावड़ियों का पुनर्जीवन, एक ऐतिहासिक बावड़ी को गोद लेकर उसका संरक्षण तथा 12 राष्ट्रीय राजमार्गों पर वर्षा जल हार्वेस्टिंग का कार्य मेरी प्रमुख उपलब्धियों में शामिल है।

जल संरक्षण के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण भी मेरी प्राथमिकता है। मैंने एक मिनी जंगल विकसित किया है, जिसमें नीम, पीपल, जामुन, आम, कटहल, शीशम, गुलमोहर, कचनार, हरसिंगार सहित अनेक देशी प्रजातियों के वृक्ष लगाए गए हैं। "पौधा प्रसादी" अभियान के माध्यम से ऐसे पौधों का वितरण किया जा रहा है जो भविष्य में विशाल वृक्ष बनकर पर्यावरण को समृद्ध करेंगे।

मेरा विश्वास है कि स्थायी परिवर्तन जन–जागरूकता से ही संभव है। इसलिए मैं विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं सामाजिक संस्थाओं में जल संरक्षण, स्वच्छता, वृक्षारोपण, रैलियाँ, कार्यशालाएँ, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन कर नई पीढ़ी को प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनने के लिए प्रेरित करती हूँ। मेरा सभी नागरिकों से विनम्र आग्रह है कि जल को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार समझें। अपने घरों में वर्षा जल संचयन अपनाएँ, जल की प्रत्येक बूंद का सम्मान करें और "एडॉप्ट द रेन, कैच द रेन" अभियान से जुड़कर जल–सुरक्षित भारत के निर्माण में सहभागी बनें। आइए, हम सब मिलकर संकल्प लेंकृ"हर बूंद बचाएँ, हर घर में वर्षा जल संचयन अपनाएँ और आने वाली पीढ़ियों के लिए जल, पर्यावरण और जीवन को सुरक्षित बनाएं।" जल बिन जीवन है नहीं , जल देता है प्राण बड़ा ही शक्तिवान जल करें सृष्टि निर्माण।

जल संरक्षण में मिला सम्मान–

समाज मुझे स्नेहपूर्वक "वॉटर वूमेन" के नाम से जानता है तथा भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा "वॉटर हीरो" की उपाधि से सम्मानित किया। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं द्वारा निरंतर सम्मानित किया गया। ग्वालियर नगर निगम ने स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर का दायित्व सौंपकर जनजागरूकता के इस अभियान को और अधिक सशक्त बनाने का अवसर प्रदान किया है।

















वृक्षारोपण हम करें, हो प्राणी कल्याण।
प्रकृति रूप में हम करें, ईश्वर का सम्मान।।
Savitri shrivastava (Water women)





पौधा महाप्रसादी
Dip's NEER



सुरेशपाल जादौन

पेशा : समाजसेवी
संगठन : तरुण भारत संघ
स्थान : सपोटरा, करौली, राजस्थान



जनसहभागिता से जल संरक्षण और ग्राम स्वावलंबन की नई दिशा

जल क्रांति अभियान से अब तक लगभग 5000 कुओं का सफलतापूर्वक रिचार्ज किया जा चुका है और मध्य प्रदेश के कई जिलों में जारी है यह अभियान

मैं सुरेशपाल जादौन, राजस्थान के करौली जिले के सपोटरा क्षेत्र से हूँ। मेरा मानना है कि जल केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, कृषि, पर्यावरण और ग्रामीण समृद्धि का आधार है। पानी के बिना न खेतों में हरियाली रह सकती है, न गाँवों में खुशहाली। इसी विचार ने मुझे जल संरक्षण और समाजसेवा के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी।

तरुण भारत संघ से जुड़कर मैं ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और पारंपरिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन के प्रति जनजागरण का कार्य कर रहा हूँ। मेरा उद्देश्य ग्रामीणों को यह समझाना है कि यदि वर्षा की प्रत्येक बूँद को सही तरीके से संचित किया जाए, तो भूजल स्तर में सुधार लाया जा सकता है और सूखते कुओं, तालाबों तथा अन्य जल स्रोतों को नया जीवन मिल सकता है।

मैं गाँव–गाँव जाकर किसानों, महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों को जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराता हूँ। सामूहिक बैठकों, संवाद और श्रमदान के माध्यम से लोगों को प्रेरित करता हूँ कि वे अपने गाँव के जल स्रोतों की सुरक्षा और संरक्षण की जिम्मेदारी स्वयं उठाएँ। मेरा विश्वास है कि जब ग्रामीण अपने श्रम, समय और संकल्प से किसी अभियान में जुड़ते हैं, तभी वह प्रयास एक स्थायी जनआंदोलन का रूप लेता है।

मेरे लिए जल संरक्षण केवल तालाबों में पानी रोकना नहीं, बल्कि समाज में सहयोग, जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करना भी है। मैं ग्रामीणों को पारंपरिक जल संरक्षण पद्धतियों का महत्व समझाने के साथ–साथ वर्षा जल के सदुपयोग, भूजल पुनर्भरण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रेरित करता हूँ।

मेरा मानना है कि गाँव का विकास किसी एक व्यक्ति या संस्था की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का साझा दायित्व है। जब महिलाएँ, युवा, किसान और बुजुर्ग एकजुट होकर जल संरक्षण का संकल्प लेते हैं, तो जल संकट जैसी बड़ी चुनौती का समाधान भी संभव हो जाता है। जनसहभागिता ही वह शक्ति है, जो जल संरक्षण को अभियान से जनआंदोलन में बदल सकती है।

मेरा सपना है कि राजस्थान का प्रत्येक गाँव जल के मामले में आत्मनिर्भर बने, वर्षा का पानी व्यर्थ न बहे, पारंपरिक जल स्रोत पुनर्जीवित हों और किसानों को खेती के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध हो। मैं चाहता हूँ कि आने वाली पीढ़ियाँ जल संकट नहीं, बल्कि जल संरक्षण की हमारी सामूहिक विरासत को याद करें।

मेरा जीवन संकल्प हैकृहर बूँद का संरक्षण, हर जल स्रोत का पुनर्जीवन और हर गाँव में जल स्वावलंबन। क्योंकि जब समाज पानी बचाने के लिए एकजुट होता है, तभी धरती पर हरियाली, खेतों में समृद्धि और जीवन में खुशहाली लौटती है।









विनय दास

स्वास्ति दास सेवा संस्थान, दिल्ली



जनभागीदारी से स्वच्छता

पर्यावरण संरक्षण और जल स्रोतों के पुनर्जीवन कीप्रेरक मिसाल दिल्ली की यमुना ही चुनौती नहीं है

यहां साहिबी, मूनक नहर भी सफाईको लेकर एक चुनौती हैं।वर्ष 2017 से स्वस्ति दास सेवा संस्थान की टीम प्रत्येक रविवार को स्वच्छता अभियान संचालित कर रही है। उल्लेखनीय है कि ये अभियान किसी भी प्रकार कीबाहरी आर्थिक सहायता या फंड पर निर्भर हुए बिना, टीम के सदस्यों केस्वैच्छिक योगदान और सेवाभाव से चलाए जा रहे हैं। यह पहल नागरिकजिम्मेदारी, सामुदायिक सहयोग और निस्वार्थ सामाजिक सेवा की सशक्त मिसाल है।विनय दास के नेतृत्व में संस्थान ने बच्चों, युवाओं और स्थानीयसमुदायों को साथ लेकर यमुना नदी एवं मुनक नहर के संरक्षण, स्वच्छता औरपुनर्जीवन के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। इन अभियानों का उद्देश्य केवल जलस्रोतों की सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में पर्यावरण के प्रतिसंवेदनशीलता, स्वच्छता की संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण कीसामूहिक जिम्मेदारी विकसित करना भी है।संस्थान की हालिया उल्लेखनीय उपलब्धियों में मुनक नहर के लगभग ''2किलोमीटर लंबे उपेक्षित एवं प्रदूषित हिस्से का कायाकल्प'' विशेष रूप सेउल्लेखनीय है।ैवै की समर्पित टीम और युवा स्वयंसेवकों ने सामूहिकश्रम, प्रतिबद्धता और निरंतर प्रयासों के माध्यम से इस क्षेत्र को स्वच्छ एवं बेहतर बनानेकी दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह पहल दर्शाती है कि संगठित नागरिकप्रयासों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी से उपेक्षित जल स्रोतों के संरक्षणएवं पुनर्जीवन की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।विनय दास का दृढ़ विश्वास है कि ''जब नागरिक जागरूक होकर सामूहिक जिम्मेदारीनिभाते हैं, तो न केवल समाज में सकारात्मक बदलाव आता है, बल्कि सरकारीविभागों और प्रशासन को भी प्रभावी एवं दीर्घकालिक समाधान के लिएप्रेरणा मिलती है।'' उनका कार्य जनशक्ति को पर्यावरण संरक्षण की ताकत में बदलनेऔर समाज को स्वच्छता एवं जल संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक, संवेदनशील तथाजिम्मेदार बनाने का निरंतर प्रयास है।निस्वार्थ सेवा, निरंतरता,















अरविंद अग्रवाल



जल संकट समाधान का रास्ता भारत के स्कूल कॉलेज से निकलेगा:

DocMaster

पर्यावरण संरक्षण और जल स्रोतों के पुनर्जीवन कीप्रेरक मिसाल दिल्ली की यमुना ही चुनौती नहीं है

जल जीवन का आधार है। पृथ्वी पर जीवन की कल्पना जल के बिना संभव नहीं है, फिर भी आज दुनिया का एक बड़ा हिस्सा जल संकट की चुनौती से जूझ रहा है। कहीं भूजल स्तर लगातार गिर रहा है, कहीं नदियाँ और तालाब सूख रहे हैं, तो कहीं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, बढ़ती जनसंख्या, जल स्रोतों पर अतिक्रमण और पानी के अंधाधुंध दोहन ने इस संकट को और गहरा कर दिया है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जल संकट केवल पानी की कमी का विषय नहीं है, बल्कि यह खाद्य सुरक्षा, जनस्वास्थ्य, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से भी जुड़ा हुआ है। ऐसे समय में जल संरक्षण को केवल सरकार या कुछ सामाजिक संगठनों की जिम्मेदारी मानना उचित नहीं होगा। यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी इस दिशा में परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति बन सकती है, और इसकी शुरुआत विद्यालयों से होनी चाहिए।

विद्यालय केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण का केंद्र भी हैं। बचपन और किशोरावस्था में विकसित होने वाली आदतें जीवनभर व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यदि विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही जल का महत्व, जल स्रोतों की उपयोगिता और पानी बचाने के व्यावहारिक तरीके सिखाए जाएँ, तो जल संरक्षण उनके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा बन सकता है।

आज आवश्यकता है कि जल संरक्षण को केवल पाठ्यपुस्तकों के एक अध्याय तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे विद्यार्थियों के दैनिक जीवन, विद्यालय की गतिविधियों और सामुदायिक सहभागिता से जोड़ा जाए। जब विद्यार्थी जल संकट को समझेंगे, उसके कारणों का अध्ययन करेंगे और समाधान का हिस्सा बनेंगे, तभी शिक्षा का वास्तविक सामाजिक उद्देश्य पूरा होगा। स्कूल, कॉलेज के युवा बन सकते हैं जल प्रहरी युवाओं में ऊर्जा, रचनात्मकता, तकनीकी समझ और समाज को प्रभावित करने की क्षमता होती है। वे अपने परिवार, मित्रों और समुदाय तक जागरूकता का संदेश प्रभावी ढंग से पहुँचा सकते हैं। विद्यालयों में जल संरक्षण क्लब, जल प्रहरी दल और पर्यावरण समितियाँ बनाकर विद्यार्थियों को इस अभियान से जोड़ा जा सकता है। उन्हें डॉक मास्टर जल प्रहरी के आधुनिक ऐप से जोड कर हम एक जागरूकता अभियान, समाधान की ओर तैयार कर सकते हैं। क्योंकि हमें पता है दे ा में जल समाधान का रास्ता स्कूल, कॉलेज से होकर ही निकलेगा। विद्यार्थी अपने विद्यालय से लेकर सभी जगह पानी की बर्बादी रोकने, टपकते नलों की पहचान करने, पानी के उपयोग की निगरानी करने और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था को समझने जैसे कार्य कर सकते हैं। वे पोस्टर, निबंध, भाषण, नुक्कड़ नाटक, रैली और डिजिटल अभियानों के माध्यम से समाज को जागरूक भी कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि युवाओं को केवल संदेश देने तक सीमित न रखा जाए। उन्हें समाधान खोजने, योजनाएँ बनाने और अपने प्रयासों के परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर भी दिया जाना चाहिए।

विद्यालयों में जल संरक्षण के पाँच प्रभावी कदम

1. वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना''

प्रत्येक विद्यालय में उपलब्ध परिस्थितियों के अनुसार वर्षा जल संचयन की व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। विद्यार्थी छतों पर गिरने वाले वर्षा जल को एकत्र करने, उसे उचित तरीके से संग्रहित करने अथवा भूजल पुनर्भरण के लिए उपयोग करने की प्रक्रिया को समझ सकते हैं। इससे उन्हें जल संरक्षण का व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा।

''2. जल ऑडिट और पानी की बर्बादी पर रोक''

विद्यार्थियों की सहायता से विद्यालय में पानी की खपत का नियमित आकलन किया जा सकता है। कहाँ पानी अधिक खर्च हो रहा है, कहाँ रिसाव है और किन उपायों से पानी बचाया जा सकता हैकृइन प्रश्नों के उत्तर खोजकर विद्यार्थी वास्तविक बदलाव ला सकते हैं।

3. तालाबों, कुओं और स्थानीय जल स्रोतों की पहचान''

विद्यार्थियों को अपने आसपास के तालाबों, कुओं, बावड़ियों, झीलों और नदियों के इतिहास तथा वर्तमान स्थिति से परिचित कराया जाना चाहिए। स्थानीय जल स्रोतों की सफाई, संरक्षण और पुनर्जीवन से जुड़े अभियानों में उनकी भागीदारी उन्हें अपनी प्राकृतिक विरासत के प्रति संवेदनशील बनाएगी। ऐसे कार्यक्रम स्थानीय प्रशासन और विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में आयोजित किए जाने चाहिए।

4. जल संरक्षण को पाठ्यक्रम और गतिविधियों से जोड़ना''

विज्ञान, भूगोल, सामाजिक विज्ञान और नागरिक शास्त्र जैसे विषयों के माध्यम से जल संकट को समझाया जा सकता है। परियोजना कार्य, मॉडल निर्माण, स्थानीय सर्वेक्षण और जल संरक्षण पर आधारित प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों की रुचि बढ़ा सकती हैं।

5. घर–घर तक पहुँचे जल संरक्षण का संदेश''

एक विद्यार्थी अपने परिवार में पानी बचाने की आदत विकसित कर सकता है। नल खुला न छोड़ना, आवश्यकता के अनुसार पानी का उपयोग करना, पानी के पुनः उपयोग की उपयुक्त व्यवस्था अपनाना और वर्षा जल संचयन को प्रोत्साहित करना छोटे लेकिन प्रभावशाली कदम हैं। जब हजारों विद्यार्थी इन आदतों को अपनाते हैं, तो उनका सामूहिक प्रभाव व्यापक हो सकता है।

तकनीक और नवाचार से मिलेगा नया रास्ता

आज की युवा पीढ़ी डिजिटल तकनीक से परिचित है। विद्यार्थी मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल मानचित्र, सरल सेंसर और डेटा संग्रह के माध्यम से जल उपयोग तथा स्थानीय जल स्रोतों की स्थिति का अध्ययन कर सकते हैं। वे अपने विद्यालय में पानी की खपत का रिकॉर्ड रख सकते हैं और समय के साथ हुए सुधार को प्रस्तुत कर सकते हैं। विज्ञान प्रदर्शनियों और नवाचार प्रतियोगिताओं में वर्षा जल संचयन, कम पानी में स्वच्छता, जल रिसाव की पहचान तथा अपशिष्ट जल के सुरक्षित पुनः उपयोग जैसे विषयों पर परियोजनाएँ विकसित की जा सकती हैं। इससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी विकसित होगी।

हालाँकि, तकनीक अपने आप में समाधान नहीं है। उसके साथ जल के प्रति संवेदनशीलता, स्थानीय परिस्थितियों की समझ और सामुदायिक भागीदारी भी आवश्यक है।

शिक्षक, अभिभावक और समाज की साझा जिम्मेदारी

जल संरक्षण की शिक्षा तभी सफल होगी, जब विद्यालय, परिवार, समाज और प्रशासन मिलकर कार्य करेंगे। शिक्षक विद्यार्थियों को सही जानकारी दे सकते हैं, अभिभावक घरों में जल बचाने की आदतों को प्रोत्साहित कर सकते हैं और स्थानीय निकाय विद्यालयों को जल संरक्षण की व्यावहारिक परियोजनाओं से जोड़ सकते हैं।

विद्यालयों को अपने परिसर में जल संरक्षण के लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए और उनकी नियमित समीक्षा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, पानी के रिसाव को रोकना, वर्षा जल संचयन की संभावनाओं का आकलन करना तथा सुरक्षित होने पर उपचारित अपशिष्ट जल का उपयुक्त उपयोग करना। इन प्रयासों से विद्यार्थियों को यह समझ आएगा कि पर्यावरण संरक्षण केवल भाषण का विषय नहीं, बल्कि व्यवहार में लागू होने वाला संकल्प है।

जल प्रहरी अभियान और युवाओं की भागीदारी

जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने के लिए युवाओं की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। 'जल प्रहरी' जैसी पहल के माध्यम से विद्यार्थियों को जल संरक्षण, जल स्रोतों के पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन और सामुदायिक जागरूकता से जोड़ने की व्यापक संभावनाएँ हैं। यदि प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों की एक सक्रिय जल संरक्षण समिति बनाई जाए, तो वह अपने परिसर से शुरुआत करते हुए आसपास के समुदाय तक जागरूकता पहुँचा सकती है। विद्यार्थी अपने क्षेत्र के जल स्रोतों की जानकारी एकत्र कर सकते हैं, जल बचत के उपायों को बढ़ावा दे सकते हैं और स्थानीय स्तर पर चल रहे संरक्षण प्रयासों से सीख सकते हैं।

इस प्रकार विद्यालयों के विद्यार्थी केवल जल संकट के बारे में जानने वाले शिक्षार्थी नहीं, बल्कि समाधान में योगदान देने वाले '''जल प्रहरी''' बन सकते हैं।

आज की जागरूकता, कल की जल सुरक्षा और हम पूरे दे ा के स्कूलों को जोडने के लिए हम आज ही अपनी यात्रा भुरू कर रहे हैं



FERTILIZING INDIA'S SUCCESS STORY!



हर एक काम, देश के नाम

Hindustan Urvarak & Rasayan Limited contributes nearly 4 million MT urea per annum, increasing self-reliance and decreasing imports.

FARMER-FIRST COMMITMENT

Affordable inputs. Timely delivery. Empowered farmers.

- Ensuring affordable, timely and effective fertiliser solutions for farmers
- Strengthening last-mile delivery across regions and geographies
- Providing timely farmer advisories for informed and sustainable farming practices

SUPPLY SECURITY & STRATEGIC SOURCING

Assured supply. Stable markets. Stronger India.

- Leveraging alternative sources, imports and efficient trading mechanisms
- Ensuring uninterrupted fertiliser availability and market stability
- Strengthening national fertiliser security for long-term resilience

ENERGY EFFICIENCY & RESPONSIBLE OPERATIONS

Efficient plants. Safe operations. Lower carbon footprint.

- Driving energy savings through efficiency-led plant operations
- Continuous improvement through adoption of energy-efficient technologies
- Maintaining the highest standards of operational safety and security

SUSTAINABILITY & POLICY ALIGNMENT

Balanced nutrition, Healthier soil. Sustainable future.

- Active implementation of PM-PRANAM initiatives
- Promoting balanced nutrient use and reducing chemical dependency
- Supporting policy reforms for sustainable and climate-smart agriculture

ADVANCING TOWARDS A SELF-RELIANT FUTURE

Atmanirbhar agriculture. Resilient tomorrow.

- Supporting Atmanirbhar Bharat in fertiliser and agriculture sectors
- Building a resilient, sustainable and farmer-centric ecosystem
- Aligned with national priorities and India's long-term growth vision



HINDUSTAN URVARAK & RASAYAN LIMITED

Corporate Office: Core 3 & 4, 9th Floor, SCOPE Minar, Laxmi Nagar District Centre, New Delhi-110092 Website: www.hurl.net.in | Email: contactus@hurl.net.in

Follow Us:

SINGHANIA UNIVERSITY

Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu – 333515, Rajasthan

9355168880/9810092400 admissions@singhaniauniversity.ac.in



Singhania University Ranked #1 Emerging Private University in Rajasthan & #8 in India by Outlook University Rankings 2025

Explore from our wide range of 100 + programs

- AI & Machine Learning
- Law & Legal Studies
- Architecture & Design
- Engineering and Information Technology
- Business, Management & Commerce
- Journalism & Communication
- Agriculture
- Physical Education, Sports & Yoga Sciences



Dr. Manoj Kumar (IAS Retd.), President, Singhania University

"Singhania University is deeply committed to empowering the youth of our country to become active contributors to India's growth story. We are continuously working to strengthen the industry-academia ecosystem, ensuring our students gain the knowledge, skills and exposure they need for a seamless transition from classrooms to careers."

We welcome partners from industry and academia to join us in advancing the Hon'ble Prime Minister of India's vision of inclusive, skill-driven, and future-ready education. Together, let's shape opportunities, drive innovation, and create lasting impact.

To explore collaboration opportunities, write to us at corporate_relations@singhaniauniversity.ac.in

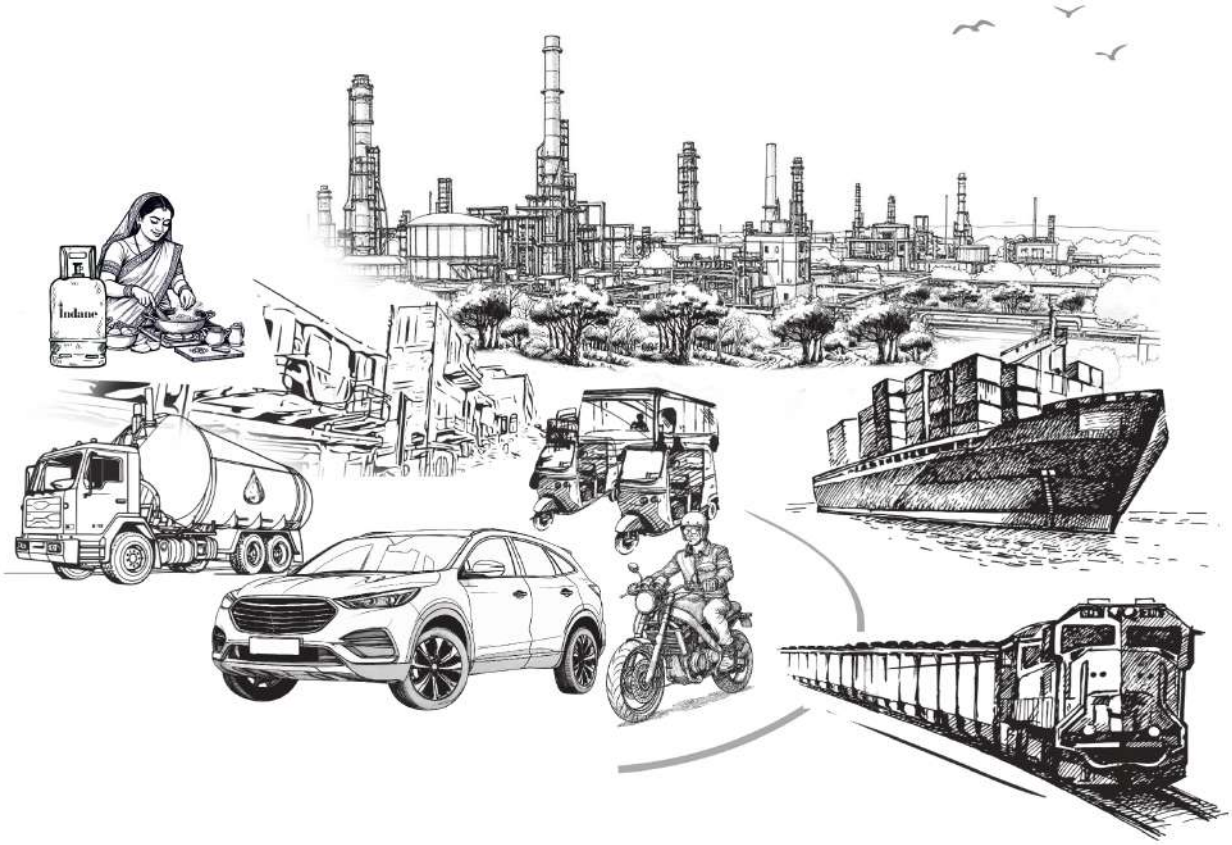
Scan this QR to visit our website

CORPORATE AD

इंडियनऑयल
IndianOil



SERVING EVERY MILE, EVERY DAY FOR A NATION ALWAYS ON THE MOVE



- IndianOil owns and operates 10 group Refineries with a refining capacity of 80.75 MMTPA
- Total pipeline length operated by IndianOil is over 20,000 Km
- Pipelines throughput of over 100 Million Metric Tonnes per annum
- EV charging and Battery swapping stations growing over 15,000 Locations
- Product sales of over 105 Million Metric Tonnes per annum
- Fuelling journeys across the nation with over 42,000 Retail Outlets
- Over 15 Crore kitchens across India trust Indane LPG

www.iocl.com @IndianOilCorpLimited @indianOilcl @indianoilcorp @IndianOilCorporationLimited @indian-oil-corp-limited

दिल्ली मेट्रो

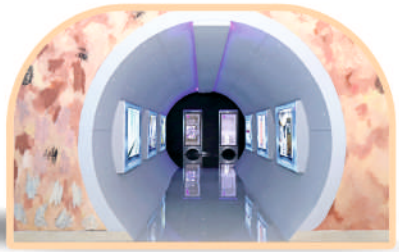
आधुनिक मेट्रो संग्रहालय अब सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन पर

दिल्ली मेट्रो संग्रहालय
DELHI METRO MUSEUM

विश्वस्तरीय मेट्रो संग्रहालय में
अनूठे आकर्षणों का आनंद लें।



मेट्रो सिम्यूलेटर



टनल मॉडल बैकलिट प्रदर्शनी के साथ



टनल बोरिंग मशीन का कार्यशील मॉडल



सेल्फी पॉइन्ट



लॉन्चिंग गर्डर का कार्यशील मॉडल

समय
सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक

प्रत्येक **सोमवार** एवं सभी
सार्वजनिक अवकाशों पर बंद।



ग्रुप विजिट हेतु संपर्क करें: म्यूज़ियम क्यूरेटर । ई-मेल : metromuseum@dmrc.org

आइए, एक विशेष अनुभव के लिए हमारे साथ जुड़ें!



Rahe Khushiyan Surakshit

Secure their tomorrow, and let happiness keep blossoming.

PRESENTING

LIC's Jeevan Raksha

UIN: 512N368V01 I Plan No.: 894

Non-Par, Non-Linked, Life, Individual, Pure Risk Plan

Key Features:

- Provides financial support to the family in case of unfortunate death of the Life Assured during the policy term
- Minimum Sum Assured of ₹5 Lakh
- Flexibility to choose from multiple premium payment terms
- Special rates for women
- Benefit of attractive High Sum Assured Rebate
- Rider options also available

Also Available Online

LIC/R1/2026-27/18/Eng

Scan the QR code and Download My LIC App

Visit: licindia.in

Call Centre Services (022) 6827 6827

Our WhatsApp No. 8976862090 Say 'Hi'

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

For details, contact your Agent/Nearest LIC Branch/visit www.licindia.in

Follow us : LIC India Forever I IRDAI Regn No.: 512

Har Pal Aapke Saath

BEWARE OF SPURIOUS PHONE CALLS AND FICTITIOUS / FRAUDULENT OFFERS. IRDAI or its officials do not involve in any activities of insurance business like selling insurance policies, announcing bonus or investment of premiums, refund of amounts. Policyholders or the prospects receiving such phone calls are requested to lodge a police complaint.
For more details on risk factors, terms and conditions, please read sales brochure carefully before concluding a sale.